Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वभौम आर्य-साम्राज्य

COMPILED

आचार्य विदेह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

oundatio

urukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R

ओ३म्

पुस्तक संख्या 95/211

पञ्जिका-संख्या.... 25248

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई सज्जन पन्द्रह दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

इसमें आर्यसमाजों के साप्ताहिक अधिवशना के लिये सुरुचिकर सामग्री तथा मनोवैज्ञानिक कार्यक्रम है। जिन आर्यसमाजों में इसके अनुसार अधिवेशन किये जाते हैं, उनमें उत्तरोत्तर उपस्थिति बढ़ रही है। सन्ध्या और हवन के मन्त्रों का सरल स्पष्ट अर्थ भी दिया गया है।

मूल्य तीन आना।

पता—व्यवस्थापक,

वेदसंस्थान, अजमेर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वभौम आर्य-साम्राज्य

CHECKED 1973
Initial

लेखक—

आचार्य विद्यानन्द विदेह

15,211
25154

आठ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—

विश्वदेव शर्मा,

व्यवस्थापक—

वेद-संस्थान, अजमेर.

मुद्रक—

नेशनल प्रेस, अजमेर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

विषय-क्रम

—:o:—

विषय		पृष्ठ संख्या से तक
१.	विश्व कल्याण	१— ३
२.	आदर्श राष्ट्र	३— ६
३.	षडाधार	६—११
४.	सार्वभौम राष्ट्रीयता	११—१५
५.	नाम	१६—१८
६.	आर्य साम्राज्य	१८—२१
७.	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्	२२—२३
८.	ध्वज	२४—२७
९.	विश्वशासन	२७—३०
१०.	राष्ट्रवर्धन	३०—३२
११.	धर्मतन्त्र	३३—३६
१२.	अनम साम्राज्य	३६—३९
१३.	विजय भावना	४०—४२
१४.	निर्दल राष्ट्र	४२—४९
१५.	उपनिवेश	४९—५३
१६.	उपाय	५३—६०
१७.	उपसंहार	६०—६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

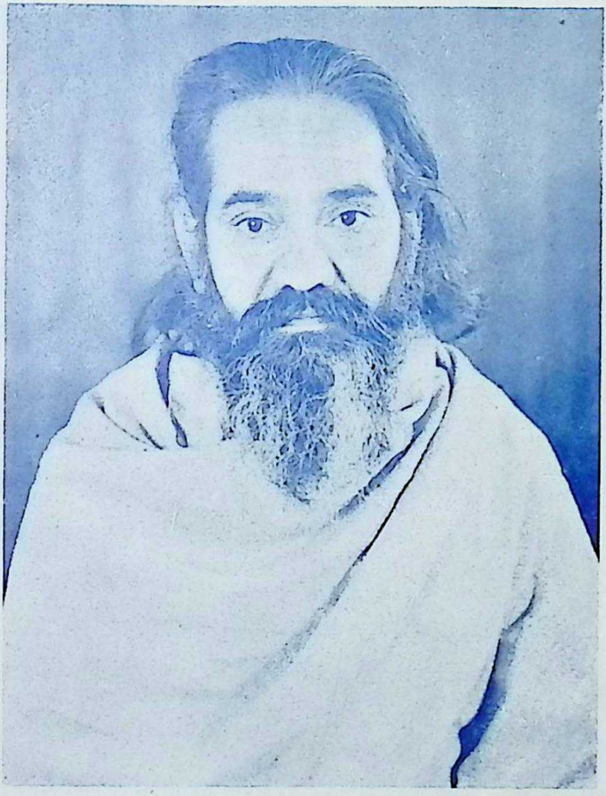

आचार्य विद्यानन्द 'विदेह'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15,211
25154

सार्वभौम आर्य-साम्राज्य

१—विश्व-कल्याण

विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ॥ (अ० १-३१-४)

हमारा संसार सुविभूतिमय और ज्ञानपूर्ण हो ॥

हमारा प्यारा यह आर्यराष्ट्र ही नहीं, इस भूमण्डल का प्रत्येक राष्ट्र, निर्माण-क्रम में होकर प्रस्थान कर रहा है। प्रत्येक विचारशील और कर्मवान् व्यक्ति का यह पवित्र कर्तव्य है कि मानव-निर्माण के इस क्रम में अपने सद्विचारों तथा सत्प्रयत्नों से अपना दिव्य भाग समर्पण करे। इसी भावना से प्रेरित होकर यह प्रकाशन जनता की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है।

यह न कोई घोषणापत्र है न नीतिनिर्धारण। यह तो विचार-विमर्श के लिये स्नेहघृतमिश्रित एक स्वच्छ सात्विक सामग्री है, जो इस राष्ट्रयज्ञानुष्ठान में वातावरण को सुगन्धित तथा चेतनामय बनाने में सिद्ध, सुहुत और सार्थक होगी। आशा है शिक्षित नागरिक इस यज्ञाग्नि के प्रकाश में कोटि कोटि जनता का पथ-प्रदर्शन करके राष्ट्रोदय द्वारा विश्वोदय करने का सत्कार्य करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा न हो कि पाठक इसे पढ़ कर किसी कोने में पटक दें। स्वयं पढ़ कर अधिकाधिक व्यक्तियों को इसे पढ़ने के लिये दीजिये। यह आप की ओर से अपने राष्ट्र के प्रति एक महान् सेवा होगी।

याद रहे, शुद्ध मन और निस्स्वार्थ भाव से की गई सेवा ही सुफल और मोक्ष देनेवाली होती है। क्रोध, क्षोभ, रोष, मोह, ईर्ष्या और द्वेष से की गई प्रत्येक क्रिया अनिष्टकारिणी होती है। मस्तिष्क में विमल विचार, हृदय में उदार भाव और आत्मा में विशाल आशय धारण करके कार्य करने से ही इस पृथिवी पर उस स्वर्ग की स्थापना होगी जिस के लिये आज प्रत्येक प्राणी अधीर हो रहा है।

हमें अपने इस नवोदित राष्ट्र का निर्माण केवल अपने ही देश को दृष्टि में रख कर नहीं करना है, अपितु इस समस्त भूमण्डल को दृष्टि में रख कर करना है। इस भूलोक के अतीत-इतिहास का प्रत्येक अध्याय हमारे देश के इतिहास से सहाध्यायित है, उस का वर्तमान हमारे वर्तमान के इर्दगिर्द चक्कर लगा रहा है और हमारे उज्वल भविष्य से ही उस का भविष्य समुज्वल होगा।

तुष्टीकरण और अन्धानुकरण से नहीं, वस्तुस्थिति और निज परम्परा पर अवस्थित होने से ही लक्ष्य की सिद्धि होगी। अपने गौरवपूर्ण भूत के आधार पर ही भविष्य का भव्य भवन निर्माण करना श्रेयस्कर होगा। अपने भूत को वर्तमान के अनुरूप ढालने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में तो कोई आपत्ति नहीं, परन्तु अपने भूत को सर्वथा त्याग कर आगे बढ़ना न केवल भयंकर भूल होगी, अपितु समस्त विश्व के लिये अमंगलकारी होगा।

२—आदर्श राष्ट्र

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

(य० २२-२२)

ब्रह्मन्! हमारे (राष्ट्रे) राष्ट्र में (१) (ब्राह्मणः) ब्राह्मण (ब्रह्म-वर्चसी) ज्ञानदीप्ति से युक्त (आजायतां) हो (२) (राजन्यः) क्षत्रिय (शूरः) शूर (इषव्यः) शस्त्रधारी (अति-व्याधी) [शत्रुओं को] अति परास्त करनेवाला और (महा-रथः) महारथी (आजायतां) हो (३) (धेनुः दोग्ध्री) गौ दुधार हो (४) अनड्वान्) बैल (वोढा) वहनसामर्थ्य से युक्त हो (५) (सप्तिः आशुः) अश्व शीघ्रगामी हो (६) (योषा) युवती (पुरं-धिः) पुर-धारिका हो (७) (अस्य यजमानस्य) इस यज्ञशील राष्ट्र का (युवा) युवक (सभेयः) सभाकुशल (जिष्णू) विजयशील (रथे-स्थाः) यान पर स्थित होने वाला और (वीरः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर (जायतां) हो (८) (नः) हमारे लिये (निकामे-निकामे) यथेच्छ, कामना कामना पर (पर्जन्यः) मेघ (वर्षतु) वर्षे (९) (ओषधयः) ओषधियां (नः) हमारे लिये (फलवत्यः) फलवती होकर (पच्यन्तां) पकें (१०) (नः) हमारा (योगक्षेमः) योगक्षेम (कल्पतां) सम्पादन हो ।

इस मन्त्र के दश भाग हैं । अन्तिम भाग में कहा है "हमारा योगक्षेम हो ।" प्रथम ९ भागों में बताये गये हैं राष्ट्र को सुरक्षित और सम्पन्न बनाने के साधनोपाय ।

राष्ट्र को अक्षुण्ण बनाने के लिये सब से पहिला साधन है ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण । ब्राह्मण जन्म से नहीं साधना से बनता है । ब्राह्मण कहते हैं उन ऋषियों, विद्वानों, महात्माओं और मेधावी कवियों को जो राष्ट्र और विश्व को मार्ग दिखाते हैं । ब्राह्मण कहते हैं, उन राष्ट्र-योगियों को जो स्व और स्वार्थ की आहुति देकर राष्ट्र और संसार को सुगन्धित करते हैं । ब्राह्मण कहते हैं उन सदाचारी त्यागी सूरियों को जो अवसर-अवसर पर राष्ट्र को उपाय सुझाते हैं । ब्राह्मण कहते हैं राष्ट्र के विचक्षण नेताओं को ।

नेता राष्ट्रजनों को उत्कट राष्ट्रभावना से ओतप्रोत और आप्लावित करते हैं और समस्त जनता को राष्ट्र की सेवा और रक्षा के लिये कटिबद्ध रखते हैं । जिस राष्ट्र में सच्चे नेता होते हैं, उस राष्ट्र की समस्त जनता क्षत्रिय अर्थात् शूर होती है, उस राष्ट्र की जनता अद्भुत साहसी और राष्ट्ररिपुओं को परास्त करनेवाली होती है । नेता राष्ट्र के नेत्र होते हैं और नागरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं राष्ट्र की भुजायें। नेताओं और नागरिकों को अपनी स्थिति स्पष्टतया समझ लेनी चाहिये। नेत्रों के विना भुजायें वेकार हैं और भुजाओं के बिना नेत्र वेकार हैं। नेत्र दिखायें और भुजायें पराक्रम करें, तभी राष्ट्र समुन्नत होता है। नेताओं को चाहिये कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक में क्षत्रियत्व का सम्पादन करें। नेता राष्ट्र की मानव शक्ति को पंगु न रक्खें, अपितु सब को शस्त्रधारी और महारथी बनायें। नेताओं में जनता के प्रति और जनता में नेताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और आस्था का होना परमावश्यक है। ब्रह्म और क्षत्र के संयोग से ही राष्ट्रोदय हुआ करता है। ब्रह्म स-मन्त्र स्वाहा बोलता है और क्षत्र आहुति छोड़ता है। ब्रह्म आदेश देता है और क्षत्र आदेश का पालन करता है। नेता कहते हैं "यह करो" और सारा राष्ट्र वही करता है। नेता कहते हैं "यह मत करो" और सारा राष्ट्र उस को नहीं करता है। इसी को कहते हैं ब्रह्म क्षत्र का संयोग। जहां यह सुखद संयोग होगा, वहां न संकीर्णता होगी न स्वार्थपरता, न साम्प्रदायिकता होगी न प्रान्तीयता, न दलीयता होगी न पार्टीयता। जहां यह शुभ संयोग होगा, वहां होगा एकमात्र एक अखण्ड राष्ट्र।

राष्ट्र की उपादेयता के लिये दुधार स्वस्थ गौओं, बलिष्ठ भारवाही बैलों और शीघ्रगामी अश्वों का महत्व स्पष्ट है। परन्तु राष्ट्र की युवतियों और युवकों की क्षमता के विषय में वेद जो आदेश देता है, आर्यावर्त के नौनिहालों को उसे हृदयंगम कर लेना चाहिये। वेद के शब्दों में युवतियां हों पुरधारिका और युवक हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयशील वीर। पुर के अर्थ हैं नगर और दुर्ग। युद्धावसरों पर ग्रामों, नगरों और दुर्गों की रक्षा करना युवतियों का कर्तव्य है, और युवकों का कर्तव्य है स्थल-जल-आकाश-यानों पर स्थित हो कर रणक्षेत्र में शत्रुओं को परास्त कर के विजय लाभ करना, तथा सभाओं और विश्वपरिषदों में अपने न्याय्य पक्ष का स्पष्टीकरण और पोषण करना।

जब आप का राष्ट्र इस प्रकार समुन्नत, सर्वशक्तिमान्, सर्वगुणसम्पन्न और समृद्धिशाली बन जायेगा, तब ही निकामे-निकामे मेह वर्षेगा, और जब जो कामना करोगे वह तभी पूरी होगी। जब जो चाहोगे वही होगा। राष्ट्र ही कल्पवृक्ष है। इस कल्पवृक्ष को सींच कर हराभरा करो। इस कल्पवृक्ष में ही समस्त ओषधियां और फल निहित हैं। इस पर से आपको उत्तम और पक्क फल मिलेंगे। इसी की छाया में सब मनोकामनायें पूरी होंगी। तभी "योगक्षेमो नः कल्पताम्" हम सब का योगक्षेम होगा।

३—षडाधार

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

(अ० १२-१-१)

[१] (बृहत् सत्यं) विशाल सत्य [२] (उग्रं ऋतं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्र अनुशासन [३] (दीक्षा) दृढ़ संकल्प [४] (तपः) श्रम [५] (ब्रह्म) विवेक और [६] (यज्ञः) संगठन-संगतिकरण, ये षडाधार हैं, जो (पृथिवीं) राष्ट्रमही को (धारयन्ति) धारण करते हैं। ये छः आधार जितने सुदृढ़ और सुस्थिर होंगे राष्ट्रभवन उतना ही भव्य और स्थायी होगा। प्रत्येक नागरिक को इन्हें हृदयंगम कर लेना चाहिये।

सम्पूर्ण राष्ट्र ही विशाल सत्य है। प्रान्त, ज़िला, नगर, ग्राम, संस्था, समाज, संघ, दल, समुदाय, सम्प्रदाय, व्यक्ति, इत्यादि, अल्प सत्य हैं। विशाल सत्य की रक्षा के लिये अल्प सत्यों की वलि दी जा सकती है, परन्तु अल्प सत्यों की रक्षा के लिये विशाल सत्य को क्षीण नहीं किया जा सकता। शरीर की रक्षा के लिये अवयव को काटा जा सकता है, परन्तु अवयव की रक्षा के लिये सम्पूर्ण शरीर को जोखम में नहीं डाला जा सकता। बहु के हितार्थ अल्प को मिटाया या पचाया जा सकता है, परन्तु अल्प के हितार्थ बहु को नष्ट नहीं होने दिया जा सकता। पूर्ण की रक्षा में अंश स्वतः ही सुरक्षित रहता है। पूर्ण का विनाश प्रत्येक अंश का विनाश है।

निस्सन्देह सम्पूर्ण राष्ट्र ही विशाल सत्य है, जिसकी सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिये कठोर अनुशासन नितान्त आवश्यक है। कठोर अनुशासन की स्थापना कठोर शासन से नहीं हो सकती। सच्चा अनुशासन तो नागरिकों के आत्म-संयम, विचार-सौजन्य तथा हृदय-औदार्य से ही स्थापित होता है। वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयम, सौजन्य और औदार्य का नाम ही सार्वजनीय अनुशासन है। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि स्वेच्छा से अपने अन्तःकरण में इस स्वर्णिम अनुशासन की स्थापना करे। राष्ट्र के हित में सोचने, विचारने, बोलने तथा वैधानिक रीति से कार्य करने की प्रत्येक व्यक्ति और समाज को पूर्ण स्वतन्त्रता होनी ही चाहिये, परन्तु किसी भी आन्दोलन में मर्यादा और विधान का अतिक्रमण कदापि न होना चाहिये। अनुशासन अथवा मर्यादापालन राष्ट्र की आत्मा है।

राष्ट्र को विशाल सत्य मानते हुए और आत्मना राष्ट्रानुशासन में रहते हुए प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रोदय की दीक्षा लेनी चाहिए, राष्ट्र के अभ्युदय का वर व्रत धारण करना चाहिये, राष्ट्र को उन्नत करने और समुन्नत रखने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये। हमें अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता को चिरस्थायी बनाना है, न्यूनताओं को दूर करके पूर्णता का सम्पादन करना है, भय और भ्रष्टाचार को भगाना है, अपने उदात्त अतीत को वर्तमान में समुपस्थित करना है, वेदवाणी को पुनः विश्वधर्म और देववाणी को पुनः विश्वभाषा बनाना है, सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य की स्थापना करके इस भूलोक को एक अभंग विश्वपरिवार बनाना है। इस सब को कार्यरूप में परिणत करने का दृढ़ संकल्प कीजिये।

तप (श्रम) की अद्भुत महिमा है। तपशील व्यक्ति ही संकल्पों को सार्थक किया करते हैं। ये संकल्प शुभ हैं, उदात्त हैं, इनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साध में लग जाइये। इन की सिद्धि में ही विश्व का सुख, सौभाग्य और हित निहित है। आर्य कठिनाइयों से नहीं घबराया करते। श्रेष्ठ कर्म कष्टसाध्य ही हुआ करते हैं। महत्कार्यों के लिये विपुल तप अनिवार्य है।

संकल्पों की पूर्ति के लिये केवल तप ही पर्याप्त नहीं होता। तप के साथ विवेक नहीं होता तो तप प्रायः व्यर्थ सिद्ध होता है। कार्य बड़ी सूझ बूझ के साथ करना होगा। पदेपदे सतर्कता और सावधानी वर्तनी होगी। अपनी मान्यताओं और अपने सिद्धान्तों पर अविचल रहते हुए भी समयानुसार कार्यशैलियों में परिवर्तन करना पड़ सकता है। उद्देश्यों और लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए भी पथों में परिगमन हो सकता है। आदर्शों में सनिष्ठ रहते हुए भी साधनों में व्यवधान पर्यवधान आ सकते हैं। विदेशों और विदेशियों का अनुकरण करना अविवेकपूर्ण कार्य है। विवेक और बुद्धिमानी इसी में है कि हम अपने पुरातन राष्ट्र का निर्माण अपनी ही परम्पराओं और मर्यादाओं के आधार पर करें। हमारी परम्परायें और मर्यादायें सर्वोत्कृष्ट, व्यापक, दिव्य और चिरस्थायी हैं। फिर हम दूसरों की निकृष्ट, अधम, आसुरी और अस्थायी रीति-नीतियों का अनुसरण क्यों करें।

अन्तिम परन्तु सर्वातिशय आवश्यक आधार है सङ्गठन अथवा सङ्गतिकरण। जो भी विगठन और असंगतिकरण की प्रवृत्ति कराने वाले तत्व हैं, उन सब को निर्मूल करके हमें अपने राष्ट्र को सर्वतः एक अखण्ड, अविभक्त, सुसङ्गठित, प्रबल, सर्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिमान् और सर्वगुण सम्पन्न राष्ट्र बनाना है। विविध विभिन्नताओं का समन्वय करके हमें अपने राष्ट्र में एकरूपता लानी है। अखिल राष्ट्र को और समस्त नागरिकों को एकरूप बनाना है। "एक देश, एक राष्ट्र, एक सम्राट्, एक भाषा, एक संस्कृति, एक धर्म, एक वेश, एक रूप" यह हमारा आदर्श है, यही हमारा लक्ष्य है, यही हमारी साध है। **प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता, वर्गवाद, राजनीतिक दल, पार्टीवाद** इत्यादि सब को समाप्त करके हमें एक निर्दल सुसङ्गठित राष्ट्र का निर्माण करना है।

(नः) हमारे (भूतस्य भव्यस्य पत्नी) भूत और भविष्य की स्वामिनी (सा पृथिवी) वह मातृभूमि (नः) हमारे लिये (उरुं लोकं) विशाल लोक, विस्तृत क्षेत्र (कृणोतु) सम्पादन करे। हमारे राष्ट्र का वर्तमान उसके भूत का परिणाम है और उसका भविष्य उसके वर्तमान का ही परिणाम होगा। वर्तमान का एक सिरा भूत है और दूसरा भविष्य। यदि हम वर्तमान का सदुपयोग बुद्धिमानी के साथ करेंगें तो भूत की भूलों को सुधार सकेंगे और अपने भविष्य को भव्य बना सकेंगे। यदि हम अपनी पावन मातृभूमि के वर्तमान का निर्धारण सतर्कता और सावधानी के साथ करेंगे तो हमारा भूत जगमगा उठेगा और हमारा भविष्य हमारी व्याप्ति तथा विस्तृति के लिये हमें इस समस्त भूमण्डल पर विस्तृत लोक और विशाल अवकाश प्रदान करेगा।

हमारा वर्तमान बड़े महत्व का है, क्योंकि वही भविष्य का भी निर्माता है। अतः यह परम आवश्यक है कि हम अपने राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वर्तमान की साधना बड़ी सावधानी तथा गहन गम्भीरता के साथ करें। राष्ट्रनिर्माण में हठ, दुराग्रह, स्वार्थ, व्यक्तिसुविधा, दलगत लाभ, उत्तेजना, आवेश और अहंमन्यता से काम न लेकर दीर्घदर्शिता, शान्ति और सर्वमान्यता से काम लेना ही श्रेयस्कर होगा।

४—सार्वभौम राष्ट्रीयता

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः॥ (ऋ० १-१३-९)

(इडा) वाणी, भाषा (सरस्वती) संस्कृति तथा (मही) भूमि, (तिस्रः मयः—भुवः देवीः) तीनों कल्याणमयी देवियां (अस्रिधः) अचूकतया (बर्हिः) हृदयासन पर (सीदन्तु) विराजती रहें।

वेदवाणी का अवतरण देववाणी [संस्कृत] में सृष्टि के आदि में हुआ, जब कि संसार में अन्य किसी वाणी का अस्तित्व ही न था। वेदवाणी और देववाणी दोनों मिलकर "इडा" कहाती हैं। मन्त्र में पठित "इडा" शब्द से यही तात्पर्य है। 'सरस्वती' का अर्थ है इडा में विहित वैदिक संस्कृति। मही का अर्थ है यह समस्त भूमण्डल। इडा और **सरस्वती** का समस्त भूमण्डल पर प्रचार और प्रसार करना आर्यावर्तीय आर्य्यों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा चरम लक्ष्य तथा परम उद्देश्य रहा है। "कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्" का वैदिक घोष इडा और सरस्वती को समस्त भूमण्डल पर व्याप देने की भावना का ही प्रेरक और उत्तेजक है। हमारा पवित्र लक्ष्य अखिल भूलोक पर इडा और सरस्वती की स्थापना है। पशु-मानव को मानव-मानव अथवा देव-मानव बनाने का और कोई उपाय ही नहीं है। अपने राष्ट्र के निर्माण के मूल में हमें इस भावना को अन्तर्निहित रखना है। मनीषियों की यह निर्विवाद धारणा और उनका यह निश्चय मत है कि एक मात्र वेद ही विश्वधर्म, केवल संस्कृत ही विश्व भाषा और एक मात्र वैदिक संस्कृति ही मानव-संस्कृति बनने की क्षमता रखते हैं। इसी मान्यता के साथ हमें इस आर्यराष्ट्र का पुनर्रचन करना चाहिये।

हां, व्यावहारिक कठिनाइयों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। आज स्वयं आर्यावर्त में भी इडा और सरस्वती का प्रचार आर्य-भाषा [नागरी] द्वारा ही सम्भव है। अभी सारी शक्ति आर्य-भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने में लगानी चाहिये। आर्य-भाषा निस्सन्देह, संसार की सब भाषाओं से सरल भाषा है और यदि उद्योग किया जाये तो अधिक से अधिक दश वर्ष में आर्य-भाषा विश्वभाषा नहीं तो देशभाषा अवश्य बन सकती है। यदि विदेशों में स्थित आर्य प्रयत्न करें तो अन्य अनेक देशों में आर्य-भाषा का व्यवहार बड़ी शीघ्रता से बढ़ सकता है। आर्यभाषा के व्यापने पर संस्कृत भाषा का व्यापना बड़ा सरल हो जायेगा। जहां जहां आर्यभाषा का प्रचलन है वहां वहां वैदिक शिक्षा तथा संस्कृति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी तीव्रता के साथ प्रचलन हो रहा है। भाषा और संस्कृति का स्रोत्र समान और अभिन्न होता है। यथा भाषा तथा संस्कृति।

यदि इडा और सरस्वती की, भाषा और संस्कृति की, रक्षा, अभिवृद्धि तथा परिव्याप्ति करनी है तो हमें सर्वप्रथम इस सनातन आर्यराष्ट्र में ही इन की प्रस्थापना करनी चाहिये। इन दो देवियों की प्रस्थापना से राष्ट्र के अन्दर अदम्य साहस, अक्षय उत्साह, अतुल वीर्य पराक्रम, अडिग आस्था, अचल विश्वास, अजेय आत्मसंबल और विशाल महत्वाकांक्षाओं का संचरण होने लगेगा। इन की प्रस्थापना से राष्ट्र में आत्मचेतना और आत्म-बोध का प्रस्फुटन होगा। इनकी प्रस्थापना से ही राष्ट्रगौरव गरिमाशिखर पर चढ़ कर विश्व को अपनी छत्रछाया में आहूत तथा आकृष्ट कर सकेगा।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। सृष्टि के आदि में आदि ऋषियों के पवित्रान्तःकरणों में वेदज्ञान का अवतरण हुआ करता है। आर्येतर निष्पक्ष तथा बहुश्रुत विद्वान् भी यह स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते हैं कि वेदसंहितायें संसार में प्राचीनतम ग्रन्थ हैं, तथा समस्त विद्याओं का मूल हैं। उनकी यह भी मान्यता है कि आदर्श, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, सदाचार का पाठ भी संसार को वेदानुयायी आर्यों ने ही पढ़ाया है। विश्व के तथाकथित सम्पूर्ण धर्मग्रन्थों में जो कुछ सत्य और शिव है वह सब वेदों का है और जो कुछ वेद से भिन्न है वह सब भ्रम, भ्रान्ति और अनाचार का कारण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौरस्त्य और पाश्चात्य भाषाविशारद अब इस धारणा को, कि संस्कृत की तरह लेटिन और अरबी भी आदिम और अन्य भाषाओं की जन्मदात्री भाषायें हैं, अशुद्ध मानने लगे हैं। उनकी अन्तिम सुनिश्चित मान्यता अब यह है कि विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत ही है। वस्तुतः समस्त भूमण्डल अपभ्रंशित या रूपान्तरित संस्कृत ही लिख बोल रहा है। संस्कृत की स्वतन्त्र धातुओं की कुल संख्या लगभग दो हज़ार है। विश्ववाङ्मय का कोई भी शब्द ऐसा नहीं है जो इन धातुओं से अर्थसहित सिद्ध न होता हो। अतः हम गत दो दशाब्दियों से यह प्रचार करते आ रहे हैं कि संस्कृत ही न केवल आर्यावर्त की, अपितु विश्व की भाषा बनने की क्षमता रखती है। संस्कृत ही विश्वभाषा बननी चाहिये और बनेगी।

इस आर्यराष्ट्र की पूर्ण एकता के लिये भी भाषा की एकता अनिवार्य है। भाषा की एकता के बिना विचार और व्यवहार की एकता का सम्पादन नहीं हो सकता। आर्यावर्त की सभी प्रान्तिक भाषायें संस्कृतजन्य हैं और साथ ही समस्त प्रान्तों में संस्कृत के लिये समान समादर है। संस्कृत अति सरल, सुबोध्य और स्वाभाविक भाषा है। संस्कृत ही वह भाषा है जिसका सब प्रान्तों में हार्दिक स्वागत किया जायेगा।

अनेक शताब्दियों से संसार के महा पुरुष समस्त भूमण्डल को एक प्रिय परिवार के रूप में देखने का मधुर स्वप्न देखते चले आ रहे हैं। संस्कृत के विश्वभाषा बन जाने पर यह स्वप्न भी सार्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकेगा। संस्कृत के विश्वभाषा बनने से ही वेदप्रचार भी सार्थक और स्थायी होगा। संस्कृत की व्याप्ति के बिना वेद की व्याप्ति नहीं हो सकती। वेद आचार-धर्म है। वेद की शिक्षायें मनुष्य मात्र के लिये हैं। वेद मानवधर्म है। वेद में ही मानव-धर्म का परिपूर्णता के साथ प्रतिपादन है। वेद में बड़े सात्विक, निर्मल, उदार, स्फूर्तिमय और उदात्त उपदेश हैं। वेद में ज्ञान, विज्ञान और सम्पूर्ण सत्य विद्यायें हैं। वेद ही मानव को मानवता का शुभ सन्देश देता है। केवल वेद ही मानव को आदेश करता है "मनुर्भव जनय दैव्यं जनम्—मानव ! मानव बन और दिव्य मानवता का सम्पादन कर"। परन्तु यह सत्य है कि विश्व में वेदप्रचार और संस्कृतप्रसार करने से पूर्व हमें आर्यावर्त में ही इडाद्वय तथा वैदिक संस्कृति की प्रस्थापना करनी चाहिये। जब हम स्वयं सुसंस्कृतज्ञ और वेदाचारी होकर सदाचार, अध्यात्म, ब्रह्मचर्य, विज्ञान, बल, पराक्रम, नीति, कलाकौशल में निष्णात होकर चतुर्मुखी उन्नति करेंगे, तब ही हमारा यह प्राचीन आर्यराष्ट्र पुनः सर्वशक्तिमान्, सर्वगुणसम्पन्न और विश्वशिरोमणि बनेगा और सूर्य के समान समस्त भूमण्डल के लिये प्रकाश और आकर्षण का केन्द्र होगा। वही आर्यावर्त वास्तविक आर्यावर्त होगा। उसी आर्यावर्त को विश्ववन्द्य मान कर विश्व फिर नमेगा। वही आर्यों का आर्य साम्राज्य होगा। तब ही यह समस्त भूमण्डल एक प्रिय परिवार की भांति सुसम्बद्ध होकर एक सार्वभौम राष्ट्र में परिणत होगा। "इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—नाम

कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि ॥

(य० ७-२९)

तू (कः) कौन (असि) है, (कतमः असि) कौनसा है, (कस्य असि) किस का है, (कः नाम असि) किस नाम वाला है ? मानवव्यक्ति की तरह मानव जाति तथा राष्ट्र के लिये भी ये चार प्रश्न बड़े महत्वपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक हैं।

आर्य जाति इन प्रश्नों के बड़े भीरु उत्तर दे रही है। इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है—"मैं हिन्दु हूँ, मैं हिन्दुओं में से हूँ, मैं हिन्दू जाति का हूँ, मैं हिन्दुनामा हूँ।" एक हज़ार वर्ष पूर्व के ग्रन्थों में "हिन्दू, हिन्दुस्तान, हिन्दू धर्म, हिन्दी, हिन्द" आदि शब्दों का कहीं नाम नहीं है। ये नाम हमारी गत एक हज़ार वर्ष की पराजित मनोवृत्ति और निरन्तर भयंकर दुरावस्था के द्योतक हैं। विदेशी मुस्लिम विजेताओं ने हेय भावना से हमें जो भी नाम दिये, हमने उन्हीं नामों से अपने देश, धर्म, संस्कृति, भाषा, आदि को पुकारना स्वीकार कर लिया। दूसरे विदेशी विजेता अंग्रेज़ों ने पुनः हमारा नामकरण किया और इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाने लगा—"मैं इण्डियन हूँ, मैं इण्डियन्स में से हूँ, मैं इण्डियन नेशन का हूँ, मेरा नाम इण्डियन है।" इन नामों से सम्बन्धित होकर हमारे राष्ट्र और हमारी जाति की ऐतिहासिक आयु केवल एक हज़ार वर्ष की रह जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग पांच हज़ार वर्ष पूर्व हमारा देश पराक्रमी भरत के नाम पर भारतवर्ष भी कहलाने लगा था, परन्तु इसके साथ ही हमारे देश का आदिम नाम "आर्यावर्त" भी प्रचलित रहा। यद्यपि देश का दूसरा नाम भारतवर्ष पड़ गया, परन्तु जातीयता का वही पुराना नाम "आर्य जाति" ही प्रचलित रहा और आर्यावर्त का प्रत्येक निवासी सदा अपने आप को "आर्य" नाम से ही गर्वान्वित करता रहा।

हमारी इस पवित्र मातृभूमि का आदिम नाम आर्यावर्त है और हमारी जाति का मूल नाम है आर्य जाति। अपने राष्ट्र और अपनी जाति को इन नामों से नामान्वित करते ही हमारे जातीय इतिहास की आयु करोड़ों वर्षों की हो जाती है। तब उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हो जाते हैं—"हम आर्य हैं, वे आर्य, जिन्होंने सदा संसार को धर्म, संस्कृति, सभ्यता और सदाचार का वरद वरदान दिया। हम उन आर्यों के वंशज हैं, जिन्होंने युग युग इस भूलोक पर न्यायशासन किया। हम उस विराट् आर्यावर्त के नागरिक हैं जो सदा विश्ववन्द्य गुरु रहा। हम उस आर्य नाम वाले हैं, जिसमें सर्वोत्कृष्टता की भावना है" अथवा "हम आर्य हैं, हम विश्वविजयी आर्यों के वंशज हैं, हम सर्वशक्तिमान् आर्यावर्त के नागरिक हैं, हमारा नाम आर्य है।" व्यक्तिशः इन प्रश्नों का शुद्ध उत्तर होगा—"मैं आर्य हूं, मैं आर्यों का वंशज हूं, मैं आर्यावर्त का हूं, मैं आर्यनामा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देश का नाम आर्यावर्त है और हमारी जाति का नाम आर्य जाति है।

६—आर्य साम्राज्य

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥
(अ० १४-१-४३)

(यथा) जिस प्रकार (वृषा सिन्धुः) वर्षणशील समुद्र (नदीनां साम्राज्यं) नदियों का साम्राज्य (सुषुवे) सम्पादन किया करता है। (एव) उसी प्रकार (त्वं) तू (पत्युः अस्तं परेत्य) पति के घर पहुँच कर (सम्राज्ञी एधि) सम्राज्ञी हो।

इस मन्त्र से दो सिद्धान्त प्रत्यक्ष ध्वनित होते हैं—

(१) साम्राज्यवाद वेदविहित है।

(२) स्त्री का मान सम्राज्ञी का जैसा होना चाहिये।

स्वयं सृष्टि की रचना ही साम्राज्यमयी है। यह सौरमण्डल इस सूर्य का साम्राज्य है। सूर्य इस सौरमण्डल का सम्राट् है। जो सम्यक् राजता-प्रकाशता है उसे सम्राट् कहते हैं। सम्राट् जिसमें प्रकाशता है वह साम्राज्य कहाता है। सूर्य सौरमण्डल में प्रकाशता है, अतः सूर्य सम्राट् है और सौरमण्डल उसका साम्राज्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यसम्राट् सौरसाम्राज्य का शोषण नहीं करता, धारण और पोषण करता है। वह अपने आकर्षण से स्वसाम्राज्यस्थ समस्त लोकों को आकृष्ट रखता हुआ, अपनी सप्त रश्मियों से उनमें प्रकाश करता है, संवत्सर चक्र घुमाता हुआ विविध ऋतुओं और ऋत्वनुसार नाना भोग्य पदार्थों का सृजन करता है। अतः "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा"–"सूर्य जगत् और जंगम का आत्मा कहाता है।" सूर्य सम्राट् अपने साम्राज्य को सब कुछ देता ही है, उस से कुछ लेता नहीं। वह अपनी रश्मियों द्वारा जलरूपी जो कर लेता है, उसे भी साम्राज्य के मंगल के लिये बादल रूप से बरसा कर वापिस कर देता है। फिर सौरमण्डल ने सूर्य को सम्राट् नहीं चुना है, सूर्य अपने ही सवितृगुण तथा पुण्य प्रताप से स्वतः ही सम्राट् बना है। सूर्य ने सौरमण्डल पर आक्रमण करके अपना साम्राज्य स्थापित नहीं किया है। वह तो अपने प्रकाशों से प्रकाशित हो कर ही सौरसाम्राज्य का सम्राट् बना है और सौरमण्डल ने उसे अपना सम्राट् मान लिया है।

समुद्र भी साम्राज्यवादी है। उसने नदियों का साम्राज्य स्थापित किया हुआ है। वह नदियों से कर लेता है और विशाल जलकोष का स्वामी बना हुआ है। परन्तु वह इस कोष को भोग विलास में व्यय नहीं करता है, अपितु समग्र कोष को बादलरूप से बरसा बरसा कर नदियों को पुनः पुनः आप्लावित तथा भूमियों को हराभरा करता रहता है। इसीलिये मन्त्र में समुद्र सम्राट् को वर्षणशील कहा है, शोषणशील नहीं। समुद्र ने यह साम्राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्रप्रहार से स्थापित नहीं किया है, नदियों की नैसर्गिक प्रवाहिति स्वेच्छा से किया है। समुद्र के साम्राज्य का स्थायित्व उस की स्वकीय गुरुता और उदारता पर आधारित है।

वैदिक अथवा आर्य-साम्राज्य का यह वास्तविक और प्राकृत स्वरूप है। आधुनिक साम्राज्यवाद एक कृत्रिम कौशल है, जिसकी तह में शोषण, विलास तथा अत्याचार निहित है, और जिसके बाहरी रूप में बनावटी मोहकता है। आसुरी सभ्यता और दस्यु-संस्कृति ने साम्राज्यवाद को वरदान के बजाय अभिशाप बना दिया है। इसीलिये साम्राज्यवाद और साम्राज्यवादियों के विरुद्ध युद्ध छिड़ा हुआ है। परन्तु साम्राज्य मिटने वाली वस्तु नहीं है। साम्राज्य तो किसी न किसी का, किसी न किसी रूप में सदा रहा ही करता है, फिर क्यों न वरदान रूप वैदिक आर्य-साम्राज्य की ही संसार में पुनः प्रस्थापना करें। विश्व में सदा कोई न कोई राष्ट्र सब से अधिक वर्चस्वी रहता है और उसी की परिधि के प्रभाव में साम्राज्य का अस्तित्व रहा करता है।

यदि सूर्य और समुद्र का साम्राज्य विनष्ट हो जाये तो संसार की वैसी ही भयंकर स्थिति हो जाये, जैसी कि वैदिक आर्य-साम्राज्य के विनष्ट, छिन्न भिन्न, होजाने से इस सम्पूर्ण भूमण्डल की हो रही है। साम्राज्य प्रकृति का धर्म है। वह न मिटाये मिटेगा, न मिटाया जा सकता है। उसे मिटाने का प्रयत्न करने वाले स्वयं ही मिट जाते हैं। संसार के सुख सौभाग्य के लिये आवश्यकता इस बात की है कि साम्राज्यवाद में से सैमेंटिकता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल कांगड़ी 25774 R 15 सा 95/299

दस्युता को निकाल कर उस में आर्यत्व की स्थापना की जाये। स्वार्थपरता के स्थान पर विश्वहित को सिंहासनारूढ़ किया जाये।

यह हो कैसे ? आर्यजाति के रक्त में आर्यत्व है। आर्यों ने सूर्य और समुद्र की तरह अपनी गुरुता और उदारता द्वारा, अपनी गुणसम्पन्नता और विश्वरंजना द्वारा, अपनी चरित्रोत्कृष्टता और सुदेनों द्वारा, अपने न्याय और स्वातन्त्र्य प्रेम द्वारा, अपने आध्यात्मिक वर्च और भौतिक सुविज्ञान द्वारा, युगों तक, इस भूमण्डल पर चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य का सुसंचालन किया। आर्यत्व, सच्चा आर्यत्व, आर्यों के संस्कार में है। जो जिसके संस्कार में है, वह ही उसकी साधना और पुनः स्थापना कर सकता है।

यह साध साध्य है, नितान्त साध्य है, यदि आर्य सूर्य और समुद्र के समान गुरु और महान् बन कर विश्वक्षेत्र में उतरें और अपने दिव्य भाग और पवित्र कर्तव्य को निर्वाहने का दृढ़ सङ्कल्प करें। क्रम यही होगा। सर्व प्रथम अपने जीवनों में आर्यत्व की स्थापना करें और फिर अपने प्रिय स्वदेश को सच्चे अर्थों में पुनः आर्यावर्त बना डालें। सशक्त और सम्पन्न होकर, दस्युत्व को मिटाते हुए, अपने गुणों और अपनी सेवाओं से संसार को अपने प्रति आकर्षित करें और उसे सदा आकृष्ट रक्खें। इसी विधि से विश्व में सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य स्थापित होगा और इसी रीति से वह चिरस्थायी भी रहेगा।

"वयं साम्राज्यवादिनः" "हम साम्राज्यवादी हैं"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ (ऋ० ९-६३-५)

(इन्द्रं) राष्ट्रैश्वर्य को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुए, (अप्-तुरः) तत्परता के साथ कार्य करते हुए, (अराव्णः) अदानियों, स्वार्थियों को (अप-घ्नन्तः) दूर हटाते हुए, मार भगाते हुए, (विश्वं) विश्व को (आर्यं) आर्य (कृण्वन्तः) बनावें।

ऋ—गतौ, मितगतौ। "ऋ" धातु, जिस से "आर्य" शब्द सिद्ध होता है, का अर्थ है गति करना, मित गति करना। अतः आर्य का अर्थ है प्रगतिशील, मिताचारी। मिताचारी का पर्यायवाची शब्द मिलना कठिन है। मिताचार में संयम, विज्ञान, सदाचार, नियमितता, न्यायपरायणता, उदारता, सर्वहितैषिता, निष्ठाशीलता आदि भाव निहित हैं।

मिताचारी आर्य है। अ-मिताचारी अनार्य है। मितता आर्यता का लक्षण है और अ-मितता अनार्यता का। मितभाषी आर्य है, अमितभाषी अनार्य। मिताहारी आर्य है, अमिताहारी अनार्य। मितभोगी आर्य है, अमितभोगी अनार्य।

वेदानुसार—"आर्या ज्योतिरग्राः (ऋ० ७-३३-७)।" (आर्याः) आर्य वे हैं जो (ज्योतिः--अग्राः) प्रकाश को आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हैं, जो प्रकाश द्वारा आगे बढ़ते हैं, जो विद्या-विज्ञान से उन्नति करते हैं, जो आत्मिक ज्योति और भौतिक विज्ञान की सहायता से जीवनपथ पर अग्रसर होते हैं, जो ब्रह्मप्रकाश और विज्ञानज्योतिः से लोगों को आलोकित करते हैं।

आर्य का अर्थ है—प्रगतिशील, मिताचारी, सदाचारी, विद्या-विज्ञानाचारी, प्रकाशाचारी, संयमी, निर्व्यसनी, निर्विलासी, निर्विषयी, परोपकारी, न्यायशील, विद्वान्, नियमित, समयपालक, सभ्य, सुशील, धर्मात्मा, व्यक्ति।

हमें संसार को आर्य बनाना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति का प्रथम साधन है राष्ट्रवर्धन, राष्ट्र का संगतिकरण और राष्ट्र का शक्तिकरण। एक सुसम्पन्न, सुसंगठित और सशक्त आर्य राष्ट्र की शक्ति पृष्ठ पर हुए बिना यह महत्कार्य सम्पादन नहीं किया जा सकता। राष्ट्रबल साथ होने पर ही विघ्नबाधाओं और विरोधियों का निराकरण किया जा सकेगा। तत्परता के साथ कार्य करने से कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए हमें राष्ट्रवर्धन तथा राष्ट्रगठन के कार्य में बड़ी तत्परता के साथ जुट जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८—ध्वज

एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः ।
अमित्रान्नो जयन्तु स्वाहा ॥ (अ० ५-२१-१२)

ध्वज राष्ट्र के आदर्शों तथा उसकी महत्वाकांक्षाओं और भावनाओं का प्रतीक होता है। आदर्श ही जाति के मूलाधार तथा आधारस्तम्भ होते हैं। किसी राष्ट्र अथवा जाति की सत्ता उस के अपने आदर्शों के साथ ग्रथित होती है। स्वादर्शों से वियुक्त होना राष्ट्रघात और जातीयमरण है। आदर्शों के अनुरूप ही जातियों की महत्वाकांक्षायें हुआ करती हैं। महत्वाकांक्षायें भावनाओं को बल देती हैं। भावनायें ही आदर्शों और महत्वाकांक्षाओं की प्रपूरिका होती हैं। आदर्श, आकांक्षा और भावना उत्कर्ष के साधन हैं, उत्थान के सोपान हैं।

स्पष्टता के लिये एक उदाहरण लीजिये। रूस के राष्ट्रीय झंडे पर दरांती और हथोड़े का चित्र है। दरांती किसानों का और हथोड़ा मज़दूरों का प्रतिनिधित्व करता है। यह ध्वज प्रकट करता है कि खेती और मज़दूरी रूस का आदर्श है, किसानों और मज़दूरों को सुखी और सम्पन्न बनाना रूस की महत्वाकांक्षा है, तथा किसानों और मज़दूरों का राज्य या उत्कर्ष रूस की भावना है।

आर्यावर्त के वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज को लीजिये। १५-८-१९४७ से पूर्व स्वरूप इस प्रकार था। ऊपर पीली पट्टी, मध्य में सफ़ेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पट्टी, दोनों के नीचे हरी पट्टी, तीनों पट्टियों पर व्यापा हुआ चर्ख़ा। उसकी व्याख्या यह की जाती थी। पीत वर्ण हिन्दुओं का, सफ़ेद रंग अल्प-संख्यकों का, हरा रंग मुस्लिमों का, चर्ख़े का अभिप्राय था हाथ के कते बुने वस्त्रों का प्रयोग। उस झंडे का प्रेरक आदर्श था हिन्दू-मुस्लिम एकता, महत्वाकांक्षा थी स्वदेशीयता और भावना थी स्वतन्त्रताप्राप्ति। उस ध्वज में साम्प्रदायिकता का भाव प्रत्यक्ष था।

१५-८-१९४७ से आर्यावर्त में जो राष्ट्रीयध्वज प्रचलित है, वह वही पूर्व का साम्प्रदायिक ध्वज है। अन्तर केवल इतना है कि इस में चर्ख़े के स्थान में अशोकचक्र है। अब व्याख्या इस प्रकार की जाती है। पीत वर्ण त्याग का द्योतक है, श्वेत वर्ण पवित्रता का, हरित वर्ण हरियाली-समृद्धि का। परन्तु यह व्याख्या इतिहास घातक है। इतिहास के विपरीत व्याख्या न की ही जानी चाहिये, न स्वीकार ही की जा सकती है।

आर्यसमाज का वर्तमान ध्वज "ओ३म्"-ध्वज है। वर्ण गेरुआ है। अतः यह ध्वज संन्यास-ध्वज है, राष्ट्रध्वज नहीं। इस पर ओं का चित्र नहीं है, केवल ओं लिखा रहता है। **सिद्धान्ततः ध्वज पर उसके वाचक का चित्र होना चाहिये।** क्योंकि ओं का कोई चित्र नहीं, अतः ओं-ध्वज बन ही नहीं सकता।

वेद सूर्यध्वज का विधान करता है। चारों वेदों का पारायण कर जाइये, वेद में सिवाय सूर्यध्वज के अन्य किसी ध्वज का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान नहीं है। एक मात्र, केवल, सूर्यध्वज ही आर्य आदर्शों, महत्वाकांक्षाओं तथा भावनाओं का द्योतक हो सकता है। सूर्य "तेज, प्रकाश और आकर्षण" का प्रतीक है, जो आर्यों के आदर्श हैं। सब प्रकार के तेजों से युक्त होकर, ज्ञान विज्ञान का प्रकाश करते हुए, समस्त संसार को अपने प्रति आकृष्ट रखना आर्य आदर्श है। सूर्य ही आर्य आकांक्षाओं का द्योतक है। सूर्य सप्त रश्मियों से न केवल सौरमण्डल का धारण और पोषण करता है, अपितु सौन्दर्य का संचार भी करता है। सूर्य विश्व का चित्रकार है। सूर्य नित्य नया प्रभात और नित्य नई उषायें खिलाता है।

समस्तवर्ण सूर्य की निम्न सप्तवर्ण रश्मियों से ही विकसित होते हैं:—

वर्ण	गुण	भावना
हरित	बुद्धिवर्धक	मेधा
नील	बलकारक	शक्ति
रक्त	तेजवर्धक	तेज
आस्मानी	शीतल	सोम्यता
नारंगी	शोधक	पवित्रता
पीत	पाचक	पाचन, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
बेंजनी	भेदक	शौर्य, दण्ड

समस्त भूलोक का न्यायपूर्वक धारण, पोषण करना और उसे सुन्दर बनाना आर्योचित आकांक्षायें हैं, जिनकी प्रेरणा सूर्यध्वज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिलती है। इन आदर्शों और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये जिन भावनाओं की आवश्यकता है, वे सूर्यध्वज से ही प्रस्फुटित हो सकती हैं। मेधा, शक्ति, तेज, सोम्यता, पवित्रता, पाचन, शौर्य, इन सप्त सौर-भावनाओं से आर्य सदा युक्त रहा करते हैं।

सूर्यध्वज देश, जाति और काल से अबाधित सार्वभौम ध्वज है, जिससे सब को समान प्रेरणा मिलती है। यदि कभी कहीं सूर्यध्वज न भी हो तो स्वयं सूर्य आकाश में साक्षात् ध्वजरूप में समुपस्थित रहता है।

(एताः) ये (सचेतसः) सतर्क (सूर्यकेतवः) सूर्यध्वजी (देवसेनाः) विजयशील सेनायें (नः अमित्रान्) हमारे शत्रुओं को (स्वाहा) स्वाहा करती हुई (जयन्तु) विजय लाभ करती रहें॥

९—विश्वशासन

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथोऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः।
तदा जानीतोत पुष्यता वचोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥

(ऋ० १-९४-८)

विज्ञान की उन्नति के साथ साथ युद्ध की भीषणता तथा व्यापकता भी बढ़ती जा रही है। विज्ञान सम्पन्न राष्ट्र अन्य राष्ट्रों पर शासन और उनका शोषण करते हैं। इन आपत्तियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचने के लिये विश्वशासन की स्थापना का आन्दोलन अग्रसर हो रहा है। सुझाव यह है कि एक सार्वभौम शासन परिषद् स्थापित की जाये, जिसमें इस भूमण्डल के समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधि हों। प्रत्येक राष्ट्र अपने अपने आन्तरिक शासन प्रबन्ध में सर्वथा स्वतन्त्र रहे परन्तु राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों पर विश्वशासन परिषद् का नियन्त्रण रहे। अन्तर्राष्ट्रीय विवादों तथा झगड़ों का निर्णय यह परिषद् करे।

परीक्षितस्य परीक्षणं मौर्ख्यम्। परीक्षित की पुनः परीक्षा करना मूर्खता है। गत दो महायुद्धों के पश्चात् के कटु अनुभव हमारे सम्मुख हैं। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर विश्व-राष्ट्र-समूह की स्थापना इन्हीं उद्देश्यों से हुई थी, परन्तु संसार ने देखा कि प्रबल और प्रमुख राष्ट्र मनमाना अत्याचार करते रहे और दुर्बल राष्ट्रों की कभी कोई सुनवाई न हुई। उस विश्व-राष्ट्र-समूह की करतूतों के कारण ही द्वितीय महायुद्ध हुआ, जिसके पश्चात् पुनः वही अभिनय हुआ और संयुक्त-राष्ट्र-संघ स्थापित किया गया। यह संघ भी सफल सिद्ध नहीं हो रहा और सम्भवतः निकट भविष्य में ही एक तृतीय प्रलयंकर महायुद्ध को जन्म देगा। दो विफल परीक्षणों के बावजूद विश्वशासन के भुलावे में आना लाभप्रद न होगा।

समस्या का वास्तविक हल उपर्युक्त मन्त्र में निहित है। चुस्त का रथ आगे। प्रगतिशील जाति का ही राष्ट्र-रथ सब से आगे रहा करता है। आर्यावर्तीय आर्य जाति को चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने इस सनातन आर्य राष्ट्र को सर्वशक्तिमान्, सर्वगुणसम्पन्न और विश्वशिरोमणि राष्ट्र बनाकर, पुनः धर्मपरायण ईश्वरभक्त न्यायशील वेदानुयायी परोपकारी आर्यों का समस्त भू-मण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य की स्थापना करें। सदाचारी उदाराशय आर्यों के ही विश्वशासन में संसार सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र और सुखी रह सकता है। विचारशील बन कर इस रहस्य को समझिये, अपने को बलवान् बनाइये और एक-छत्र अखण्ड चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य की स्थापना में प्राणपण से लग जाइये। सर्वोदय का यही एकमात्र उपाय है। विश्वकल्याण इसी में है। कार्य निस्सन्देह जटिल और कठिन है, परन्तु शिव और साध्य है। यह करना ही है। अतः प्रकाशस्वरूप परमात्मा से प्रकाश प्राप्त करते हुए जुट जाइये। चल पड़िये, यह प्रार्थना करते हुए कि "सर्वप्रकाशक देव! हमें प्रकाश दे। तेरा आदेश पालन करने के लिये हम तेरी सख्यता का अवलम्बन करके कार्यक्षेत्र में उतरते हैं। हम विफल न हों। हमें साफल्य प्रदान कर।"

केवल एक आर्य संस्कृति ही है, जिसका मूलमन्त्र है "वर्धस्व वर्धय च—बढ़ो और बढ़ाओ।" आर्यों ने इस भूमण्डल पर युगों तक चक्रवर्ती धर्मराज्य चलाया है। आर्यों के साम्राज्य में विश्व के समस्त राष्ट्र स्वेच्छा से स्वरक्षा और स्वोन्नति के लिये सम्मिलित हुआ करते थे और पुनः होंगे। आर्यावर्तीय आर्य संसार को धर्म, संस्कृति, सभ्यता, स्वतन्त्रता, मानवता, सुरक्षा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाचार, विश्वपारिवारिकता, आदि आदि वरद वरदान दिया करते थे और पुनः देंगे। आर्य ही इस लोकवाटिका को सदा सुखसौन्दर्यपूर्ण स्वर्ग बनाये रखते थे और फिर बनाये रख सकेंगे। आर्य कहते ही विश्वपोषक को हैं। योग्यतम आर्य जाति ही वास्तविक विश्वशासन की स्थापना कर सकती है। आर्य ही विश्वशासन के सूत्रधार बन सकते हैं। यही एक जाति है जिस का आधार सत्य, संयम, सदाचार, न्याय और परोपकार पर आधारित है। इसीलिये इस जाति का विश्वशासन संसार के लिये सदा वरदान रहा है और रहेगा।

(देवाः) विचारशीलो ! (सुन्वतः) प्रगतिशील का (रथः) रथ (पूर्वः) आगे (भवतु) होवे। (अभि) सब ओर (अस्माकं) हमारा (दुः-ध्यः) सुदृढ़ (शंसः) शासन (अस्तु) होवे। तुम (तत् वचः) उस बात को (आ जानीत) समझो (उत) और (पुष्यत) बलवान् बनो। (अग्ने) प्रकाशस्वरूप प्रभो ! (वयं) हम (तव सख्ये) तेरी मित्रता में (मा रिषाम) विनष्ट न हों !!

१०—राष्ट्रवर्धन

मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम्।
इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः॥

(ऋ० १०-१०१-२)

हमें संसार में आर्यत्वमय विश्वशासन स्थापित करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके लिये हमें सब से पूर्व अपने इस आर्य राष्ट्र को सुदृढ़, सुसंगठित, समृद्ध, सम्पन्न, समुन्नत और सर्वशक्तिमान् बनाना है। स्वगृह की सुव्यवस्था के बिना अन्यत्र कहीं भी विजय और सफलता की उपलब्धि नहीं हो सकती। स्वसुधार के बिना विश्वसुधार असम्भव है। आत्मोन्नति के बिना सर्वोन्नति हो ही नहीं सकती। अतः (सखायः) सखाओ ! नागरिको ! (यज्ञं) राष्ट्रयज्ञ को (प्रांचं प्र नयत) आगे बढ़ाओ, समुन्नत करो। राष्ट्र को बलवान् और सक्षम बनाने के लिये सर्वप्रथम आवश्यकता है आत्मविश्वास, नैतिक बल, और साहस की। यह कार्य प्रचार द्वारा ही किया जा सकता है। कर्मण्य लग्नवान्, विद्वान् और सदाचारी वक्ता कार्यक्षेत्र में उतरें और तर्कयुक्त तथा योजनापूर्ण वक्ताओं से देश के प्रत्येक नागरिक के अन्तःकरण में उदात्त महत्वाकांक्षा, स्थायी उत्साह और अदम्य साहस फूंकें। भावनावान् लेखक अपनी लेखनियां संभालें और राष्ट्र के शिक्षित वर्ग में उत्कर्ष की उत्कण्ठा और सर्वोदय की ज्वाला प्रज्वलित करें। (सन्द्रा कृणुध्वं) उत्साह भर दो, जोष फूंक दो।

जब समूचे राष्ट्र में विश्वास, उमंग, उत्साह और साहस का सागर उमड़ रहा होगा तब बड़ी से बड़ी योजनायें पलक मारते कार्यान्वित होने लगेंगी। अतः प्रजा को पूर्ण आश्वस्त करके (धियः आ तनुध्वं) योजनाओं का विस्तार करो। एक से एक नई और बड़ी योजनायें बनाइये और कार्यरूप में परिणत करते हुए राष्ट्र को उन्नतिशिखर पर चढ़ाते चले जाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तिकाल में भी राष्ट्र को युद्ध के लिये सर्वतः समुद्यत रखना चाहिये। शान्तिकाल में राष्ट्र की सैन्यशक्ति को सुदृढ़ और अजेय बनाना चाहिये। युद्धसज्ज राष्ट्र ही युद्धावसरों पर विजयी हुआ करते हैं। युद्ध के प्रति अरुचि और उदासीनता रखने वाले राष्ट्र धूलिकणों की भांति ठोकरें खाया करते हैं। सदा सर्वदा युद्धसन्नद्ध जातियां ही स्वतन्त्र और निर्भय रहा करती हैं। अकारण या अत्याचारपूर्ण युद्ध अधर्म है, परन्तु अन्याय या अनाचार के निराकरण तथा राष्ट्र और संसार की सुरक्षा के लिये युद्धार्थ प्रतिक्षण उद्यत रहना परम धर्म है। अतः (अरि-त्र-पर-नीं नावं कृणुध्वं) शत्रुओं को चीर कर पार जानेवाली नौकायें निर्माण करो। स्थलयान, जलयान, आकाशयान विपुल मात्रा में बनाओ, ताकि भू, समुद्र और अन्तरिक्ष, सर्वत्र, आत्मरक्षा और आक्रमण कर सकें। साथ ही (आयुध अरं कृणुध्वं) पर्याप्त शस्त्रास्त्र बनाओ।

केवल सैन्य, यान, यन्त्र और शस्त्र से ही सुरक्षा और विजय प्राप्त नहीं होती। रसद–राशन की कमी से युद्ध के समस्त साधन कुण्ठित होजाते हैं। अतः (इष्) अन्न, खाद्य भी (कृणुध्वं) सम्पादन कीजिये।

ऐक्य, उत्साह, योजना, यान, यन्त्र, शस्त्र, अस्त्र और खाद्य के विषय में राष्ट्र को स्वावलम्बी बनाना और आप्लावित रखना चाहिये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११—धर्मतन्त्र

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥
(अ० १९-४१-१)

आज संसार में शासन के नव तन्त्र प्रसिद्ध हैं। (१) एकतन्त्र, (२) सीमित एकतन्त्र, (३) प्रजातन्त्र, (४) सर्वाधिकारतन्त्र (५) समाजतन्त्र, (६) साम्यतन्त्र, (७) संघतन्त्र, (८) धर्मतन्त्र, (९) विश्वशासनतन्त्र ।

शेष तन्त्रों के विषय में विचार करने से पूर्व "धर्म, धर्मात्मा, और धर्मतन्त्र पर विचार करना उपयुक्त होगा। हम यहां इन शब्दों की दार्शनिक विवेचना न करके सर्वजन्य अर्थ ही लेंगे।

धर्म का प्रथम अर्थ है कर्तव्य, यथा—

मातृधर्म=माता का धर्म=माता का कर्तव्य ।
राजधर्म=राजा का धर्म=राजा का कर्तव्य ।

धर्म का दूसरा अर्थ है न्याय, यथा—

अपराधी को दण्ड देना धर्म (न्याय) है ।
निरपराध को सताना अधर्म (अन्याय) है ।

धर्म का तीसरा अर्थ है सदाचार, यथा—

अहिंसा परमो धर्मः=अहिंसा परम धर्म (सदाचार) है ।
न सत्यात्परो धर्मः=सत्य से बढ़ कर धर्म (सदाचार) नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः धर्म का अर्थ है–(१) कर्तव्य, (२) न्याय, (३) सदाचार। तदनुसार धर्मात्मा का अर्थ है कर्तव्यपरायण, न्यायशील, सदाचारी, व्यक्ति। धर्मतन्त्र का अर्थ है धर्मात्माओं का शासन।

कोई भी तन्त्र स्वतः उत्कृष्ट या निकृष्ट नहीं है। यदि संचालक व्यक्ति धर्मात्मा हैं तो प्रत्येक शासनपद्धति श्रेयस्कर है, अन्यथा मानव-समाज पादकन्दुक की तरह इधर से उधर ठोकरें खाया करता है। वास्तव में विश्व के समस्त तन्त्र दो तन्त्रों में ही समा जाते हैं, धर्मतन्त्र और अधर्मतन्त्र। आज संसार में प्रचलित लगभग समस्त तन्त्र अधर्म-तन्त्र ही हैं। सब तन्त्रों के नेतृत्व प्रायः शराबियों, व्यभिचारियों, असद्भाषियों और धूर्तों के हाथों में हैं। इनमें कतिपय धर्मात्मा पुरुष भी हैं, परन्तु उनकी संख्या नगण्य ही है। जनता पीड़ित है, नेता मौज उड़ा रहे हैं। जनता भूखी प्यासी तड़प रही है, नेता मांस मदिरा का सेवन और कामक्रीड़ा कर रहे हैं। जनता के रहने को जगह नहीं है, नेता प्रासादों में विहार कर रहे हैं।

धर्म बलवान् है और अधर्म निर्बल, परन्तु निर्बल होते हुए भी अधर्म का आतंक इसलिये छाया हुआ है कि अधर्मात्माओं का संगठन प्रबल है। बलपूर्ण होते हुए भी धर्म इसलिये पराजित है कि धर्मात्माओं में संगठन का अभाव है।

विश्वकल्याण और लोकहित के लिये यह परम आवश्यक है कि अब सब ऋषि, मनीषी, धर्मात्मा मिलकर अपना दृढ़ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापक संगठन बनायें। कार्य कठिन है, तप और व्रत में, तितिक्षा और संकल्प में, बड़ा चमत्कार है। परिश्रम और निष्ठा सफलता की कुंजी हैं। अध्यवसाय और सुव्यवस्था के साथ किया हुआ अनुष्ठान अवश्य सफल होता है। मूकदर्शक वन कर घर में बैठे बैठे कुढ़ने से कुछ न बनेगा। यदि सुसंगठित होकर धर्मात्मा लोग कार्यक्षेत्र में उतरेंगे तो जनता अविलम्ब या सविलम्ब उनका स्वागत और अनुकरण करेगी। जनता में प्रचार करके धर्मात्माओं को राष्ट्रों की बागडोर अपने हाथों में ले लेनी चाहिये। तभी राष्ट्र सच्चे अर्थों में राष्ट्र और सुराष्ट्र बनेंगे। धर्मात्मा जन ही निस्स्वार्थ भाव से साधना करके राष्ट्रों में सत्व, सत्य, बल, वीर्य, तेज और पराक्रम की अभिवृद्धि कर सकते हैं। धर्मात्मा ही स्व और स्वार्थ का दमन करते हुए लोक-कल्याण को सर्वोपरि रख सकते हैं। यदि संसार में मानव के सुख और सौभाग्य को चिरस्थायी करना है तो धर्मात्माओं को आत्मविश्वास के साथ सद्यः संघर्ष में कूदना चाहिये। शोभा उपरामता में नहीं है। शुभ इसी में है कि धर्मात्मा अधर्म का क्षय करते हुए धर्म की विजय करायें, दानवता को पछाड़ते हुए मानवता का शिर ऊंचा करें, मानवसमाज में कर्तव्य, न्याय और सदाचार की बेल बोयें। तभी संसार विश्वास करेगा कि "यतो धर्मस्ततो जयः।"

(स्वःविदः) प्रकाशप्राप्त, ज्ञानी (ऋषयः) ऋषि (भद्रं इच्छन्तः) लोक-कल्याण की कामना करते हुए (अग्रे) प्रथम (तपः दीक्षां) तप और दीक्षा का (उप-नि-सेदुः) अनुष्ठान किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। (ततः) तत्पश्चात् (राष्ट्रं) राष्ट्र, (बलं) बल (च) और (ओजः) पराक्रम (जातं) निष्पन्न हुआ करता है। (देवाः) धर्मात्मा जन ही (अस्मै) इस [राष्ट्र, मानवसमाज] के लिये (तत्) उस [लोकभावना] को (उप-सं-नमन्तु) उपलब्ध, सुरक्षित, रक्खें ॥

१२—अनम साम्राज्य

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।
वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः ॥

(ऋ० ६-८-६)

वैदिक शिक्षायें बल, पौरुष और पराक्रम को बढ़ानेवाली हैं, मेधा, बुद्धि, श्रद्धा, आस्था तथा आत्मसंबल की प्रेरणा करने वाली हैं, न्याय, सदाचार, संयम, विश्वैक्य और वसुधाकौटुम्ब्य की प्रवर्तिका हैं, ज्ञान, विज्ञान और लोक परलोक की प्रसारिका हैं। वेद के साचार अवलम्ब से आर्यों ने युगयुगान्तरों तक इस भू-मण्डल पर धर्मपूर्वक चक्रवर्ती साम्राज्य का सुसंचालन किया, शरीरसुखों और आत्मानन्दों से इस लोक को सदा आप्लावित रक्खा, शोषण और उत्पीड़न से नहीं, पोषण और सुशिक्षण से अखिल विश्व को एक परिवार की भांति परस्पर सुसम्बद्ध रक्खा।

आर्यों ने वेदाध्ययन और वेदाचार का परित्याग किया। परिणामतः दुर्मति और दुराचार ने संसार को रौरव नरक बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। जो आर्यावर्त शाश्वत विश्ववन्द्य गुरु और सनातन विश्व-पोषक पिता था, वह दीन, दरिद्र, पराधीन, पराश्रयी और पादाक्रान्त हुआ। आर्यसमाज के प्रवर्तक और कुप्रवाह के निरोधक महर्षि दयानन्द ने सुदृढ़, सबल और विश्वगुंज घोष के साथ घोषणा की "वयं साम्राज्यवादिनः" "हम साम्राज्यवादी हैं।" "आर्यो! पराजय की भावनाओं का परित्याग करो, उठो, कमर कसो, वेदमाता का आशीर्वाद प्राप्त करके संसार के अज्ञानान्धकार को परे धकेलते हुए चिरस्थायी ज्योतिर्मय आर्य-साम्राज्य की पुनरावृत्ति करो।" हम चेते, जगे, उठे, कर्मक्षेत्र में, युद्धक्षेत्र में, उतरे, परन्तु विजय का सेहरा महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज के शिर न बंधा। स्वतन्त्रता आई, परन्तु अवैदिकता और अनार्यता के रंग में रंगी हुई आई। स्वराज्य आया, परन्तु मातृभूमि के विभाजन और आर्य-ललनाओं के करुण क्रन्दन से हतप्रभ सा आया। शासन का सूत्र विदेशियों के हाथ से छूटा, परन्तु विदेशीयता से पीछा न छूटा। जय बुली, परन्तु हताशहृदयता के साथ।

अब भी समय है, पर अन्तिम। अवसर है, पर विकट। वर्तमान अनुशासनहीन और नेताविहीन आर्यसमाज से यह आशा करना कि वह महर्षि दयानन्द के चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना के सुखस्वप्न को पूरा करेगा, दुराशा मात्र है। तथापि आर्यसमाज के अतिरिक्त इस साध को पूरी और करेगा भी कौन? अतः आर्यसमाज की कायापलट करके आर्यसमाज के आधार पर अग्रसर होना ही श्रेयस्कर होगा। साथ ही संस्थावाद से दबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ आर्यसमाज इस कार्य के लिये यों ही अग्रसर भी न किया जा सकेगा। इस के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करना होगा। कैसे भी हो, हमें एक चिरस्थायी सार्वभौम साम्राज्य की स्थापना करनी है। इसी में मानव का हित है और इसी में मानवता की सुरक्षा है। विश्वराष्ट्रसंघों और विश्वशासनपरिषदों से विश्वव्यवस्था और विश्वशान्ति के भुलावों में कोई तथ्य नहीं। समस्या का हल एक-मात्र आर्य-साम्राज्य है। वेदानुयायी और वेदाचारी आर्यों की ही छत्रछाया में संसार स्वतन्त्र, सुरक्षित, सुखी और सुखसम्पन्न रहा है और रह सकेगा।

आर्य-साम्राज्य की स्थापना के लिये सर्वप्रथम आवश्यकता है एक विश्वनायक सर्वतन्त्र सर्वाधिकारी नेता की। ऐसा नेता निर्वाचन द्वारा निर्मित नहीं हुआ करता। ऐसा नेता तो स्वयंजात और स्वयंसिद्ध हुआ करता है। कोई एक आर्य कुन्दन के समान खरा, सूर्य के समान प्रखर, वायु के समान वेगवान्, अग्नि के समान प्रचण्ड, पृथिवी के समान सहनशील, जल के समान गहन, गम्भीर और आकाश के समान उदार, बन कर उठे और अपने त्याग, तप, प्रचार और सेवा के आधार पर ऊंचा उठता हुआ सर्ववन्द्य विश्वशिरोमणि नेता बने। जनता उसी विश्वनायक नेता की जय बोलेगी और उसी को अपना सम्राट् बनायेगी।

ऐसा कोई वीर, सुदृढ, चरित्रवान्, जितेन्द्रिय, स्वाहाकारी, आर्य आत्मविश्वास के साथ कार्यक्षेत्र में उतरे और हमारे राष्ट्र के ऐश्वर्यशालियों [विद्वानों व धनिकों] में सार्वभौम, अनम, अजेय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरस्थायी आर्य-साम्राज्य की स्थापना की भावना फूंकता हुआ जनता में अतुल साहस, उदात्त अदम्य उत्साह और अक्षय पराक्रम कूट कूट कर भर देवे। ऐसा कोई ब्रह्मक्षत्रोपेत आर्य आये और सुन्दर योजनाओं, सुष्ठु उपायों, सफल साधनों और निश्चित सुरक्षणों द्वारा असंख्य संघर्षों में, अगणित संग्रामों में, दाव दाव पर, पेच पेच पर, मोर्चे मोर्चे पर, विजय साफल्य प्राप्त कराता हुआ, आर्यराष्ट्र के प्रति प्रत्येक देश और राष्ट्र की आस्था सम्पादन करे। जनता उसी की जय बोलेगी और उसी को अपना सम्राट् बनायेगी। विश्व उसी का स्तवन करेगा और उसी को विश्वशिरोमणि सम्राट् बना कर आर्य-साम्राज्य में प्रविष्ट होगा।

(१) (अग्ने) नेतः! (अस्माकं) हमारे (मघवत्सु) ऐश्वर्यशालियों में (अनामि) अ-नम, न झुकने वाला, अडिग, अजेय, चिरस्थायी (क्षत्रं) साम्राज्य और (अजरं सुवीर्यं) अक्षय सुपराक्रम (धारय) स्थापन कर।

(२) (वैश्वानर अग्ने) विश्वनायक नेतः! (तव) तेरी (ऊतिभिः) सुरक्षाओं, शक्तियों, सुनीतियों, द्वारा (वयं) हम (शतिनं सहस्रिणं) सैकड़ों सहस्रों [मोर्चों, संघर्षों] वाले (वाजं) संग्राम को (जयेम) विजय करें॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३—विजय-भावना

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् ।
अभीषाडस्मि विश्वाडाशामाशां विषासहिः ॥

(अ० १२- १-५४)

विचार ही संसार पर शासन करते हैं। संसार में विचारों का साम्राज्य है। विचारों का प्रत्येक व्यक्ति के जीवननिर्माण में अद्भुत प्रभाव तथा प्राबल्य है। देशों, राष्ट्रों और जातियों की वस्तुस्थिति उनके नागरिकों के विचारों का ही परिणाम है। विचार, आकांक्षा, महत्वाकांक्षा तीनों पर्यायवाची शब्द हैं। विचार अथवा आकांक्षा के अनुरूप ही कार्य, प्रयत्न व पुरुषार्थ होते हैं, और कार्य, प्रयत्न व पुरुषार्थ, के अनुरूप ही प्राप्ति अथवा सिद्धि होती है। महद्विचार अथवा महत्वाकांक्षा से महत्ता की सिद्धि होती है। लघुविचार अथवा क्षुद्राकांक्षा से लघुता वा क्षुद्रता की प्राप्ति होती है।

प्रत्येक व्यक्ति के कार्य उसके विचारों के अनुसार होते हैं, और राष्ट्र में अधिकांश व्यक्तियों-नागरिकों के विचारों के अनुरूप ही राष्ट्र की नीतियों तथा कृतियों का सृजन होता है। अतः नागरिकों के विचारों को सुनिश्चित, परिष्कृत, परिमार्जित, प्रबल और बलवान् बनाने से राष्ट्र सुदृढ और अजेय बनता है, जब कि उनके विचारों में संशय, अस्पष्टता और भीरुता उत्पन्न करने से राष्ट्र नपुंसक हो जाता है और देश में पराजय की भावना घर कर जाती है। स्वस्थ विचारों से ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होता है। अतः वेद में कहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनमीवा इष आ धेह्यस्मे (अ० १८-१-४२) हमारे अन्दर स्वस्थ विचारों को स्थापित कर।"

व्यर्थ की आकाश-उड़ान और दार्शनिक शब्दावलि का प्रयोग बन्द करके हमें राष्ट्र के प्रत्येक स्त्री पुरुष में स्वस्थ कामनायें और उदात्त महत्वाकांक्षायें फूंकनी चाहियें। सब वादों, दलों और पार्टियों को समाप्त करके, आर्यावर्त में अब विश्वव्याप्ति और दिग्विजय की भावना भरनी चाहिये, जिससे प्रत्येक नागरिक का हृदय वीरता से फड़क उठे और शूरता के कार्यों की क्षमता के लिये लालायित हो उठे, प्रत्येक बालिका, प्रत्येक बालक, प्रत्येक युवती, प्रत्येक युवक, प्रत्येक सुन्दरी, प्रत्येक सुन्दर, प्रत्येक वृद्धा और प्रत्येक वृद्ध की बाछें खुल पड़ें, प्रत्येक नागरिक के सीने में ओज का संचार हो, प्रत्येक राष्ट्रव्यक्ति के अन्तस्थल में महत्वाकांक्षाओं का सागर उमड़ पड़े, और प्रत्येक नागरिक उत्साह और उमंग से ओतप्रोत होकर ऊर्ध्वग्रीव और विश्वविजय की भावना से अनुभावित रहे।

दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति भी, जब उसकी पीठ पर एक सुसंगठित और प्रबल राष्ट्र की शक्ति होती है, अपने को सदा सर्वत्र सक्षम और शूरवीर समझता है तथा देशदेशान्तरों में निर्भय और निडर होकर विचरता और विजेता के सदृश व्यवहार करता है। तद्विपरीत वीर से वीर व्यक्ति भी, जब उसके साथ राष्ट्रबल नहीं होता, अपने को सदा सर्वत्र असहाय अनुभव करता है तथा भयभीत, शंकित और आतंकित रहता है। अतः हमारे राष्ट्र के नायकों और नागरिकों को मातृ-भू सूक्त के इस मन्त्र पर मनन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वक विचार करके राष्ट्र को सबल और सर्वशक्तिमान् बनाना चाहिये। तब ही इस आर्यावर्त का प्रत्येक नागरिक सर्वत्र इस भावना के साथ विचरेगा कि—

(अहं) मैं (भूम्यां) भूमि पर, समस्त भूमण्डल पर (सह-मानः) अभिभवकारी और (उत्-तरः नाम) प्रख्यात-नामा (अस्मि) हूं। मैं (अभीषाट्) सर्वतोजेता (विश्वाषाट्) विश्व-विजेता तथा (आशां-आशां) प्रत्येक दिशा को (वि-षासहिः) विजय करने वाला (अस्मि) हूं॥

१४—निर्दल राष्ट्र

(१)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्। सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥ (अ० १२-१-४५)

प्रत्येक राष्ट्र में दो प्रकार का जनसमुदाय होता है—(१) (विवाचसं), विवक्ता और (२) (नानाधर्माणं) विधर्मा। विधर्मा=विभिन्न धर्मों-कर्तव्यों-व्यवसायों का सम्पादन करने वाला। विवक्ता=विविध वक्तृता-वक्तव्य देनेवाला—भिन्न-भिन्न बातें कहने वाला।

हमारे विशाल राष्ट्र में भी विधर्मा जनसमुदाय है। कोई कृषि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म का पालन करने वाले कृषक हैं। कोई व्यापार धर्म का पालन करनेवाले व्यापारी हैं। कोई पशुधन की अभिवृद्धि करनेवाले पशुपाल हैं। कोई कलाकौशल की उन्नति करनेवाले विश्वकर्मा हैं। कोई विद्या विज्ञान का विस्तार करनेवाले विद्वान् हैं। कोई स्वास्थ्य और शौर्य की वृद्धि करनेवाले शूरवीर हैं। कोई शासन का संचालन करनेवाले राजकर्मचारी हैं। इस प्रकार हमारे इस सनातन राष्ट्र में विधर्मा जनसमूह है।

विधर्मा का विवक्ता होना अनिवार्य है। प्रत्येक वर्ग अपने अपने धर्म—व्यवसाय के रक्षण और अभिवर्धन की मांग करता है। प्रत्येक समूह अपने अपने व्यवसाय की उन्नति के लिये संगठन, आन्दोलन और प्रचार करता है। प्रत्येक घटक स्व स्व हित में विवेचन करता है।

विवक्ता और विधर्मा जनसमुदाय को राष्ट्र में किस प्रकार रहना चाहिये? (यथा ओकसम्) घर के समान, गृहवत्। एक गृह में एक परिवार है। उस गृह अथवा परिवार के सदस्यों में से एक व्यापारी है, दूसरा प्रोफ़ेसर है, तीसरा कृषक है, चौथा सैनिक है, पांचवां पुरोहित है। सब अपने अपने व्यवसाय में उन्नति करते हुए अपनी अपनी बात कहते हैं। परन्तु सब एक मतस्थ, सहयोगी, सहायक और सम्बद्ध रहते हुए अपने समान गृह या परिवार की समुन्नति तथा अभिवृद्धि करते हैं। उनमें न कोई दल है न पार्टी। सब एक घर में समता और निजत्व की भावना से निवास करते हैं। जिस गृह अथवा परिवार के सदस्यों में दल अथवा पार्टियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जाती हैं, वह घर फूट का कटुफल भोग कर विनष्ट और अवनत हो जाता है।

हमारी (पृथिवी) मातृभूमि (नानाधर्माणं विवाचसं जनम्) विधर्मा और विवक्ता जनसमुदाय की जननी है। वह सब का सब प्रकार पालन-पोषण करती है। हम सब इस मातृभूमि में (यथा-ओकसं) गृहवत्, एक परिवार के समान, रहें। सब मिल कर समानता और सहृदयता के साथ अपने समान देशगृह और राष्ट्रपरिवार को हराभरा, समृद्ध और सम्पन्न रक्खें। हममें न कोई दल हो न पार्टी। सब नाना व्यवसायों और कलाकौशलों की उन्नति करते हुए निर्विरोधता के साथ राष्ट्रवर्धन और राष्ट्रसंचालन करें। ऐसा करने पर ही यह सनातन हिरण्यगर्भा आर्यभूमि निश्चला दुधार गौ के समान सब को, प्रत्येक को, प्रत्येक नागरिक को, धन धान्य से, सुपेय सुभक्ष्य से, ऐश्वर्य और सौभाग्य से, परिपूर्ण और आप्लावित कर सकेगी।

जहां हम अपने राष्ट्र को असाम्प्रदायिक बनाना चाहते हैं, वहां इसको निर्दल भी बनायें। जहां हम प्रान्तीय भावनाओं से राष्ट्र को अछूता रखना चाहते हैं, वहां दलगत स्वार्थों से भी इसको सर्वथा मुक्त करें। साम्प्रदायिकता तथा प्रान्तीयता से भी कहीं अधिक विषैली है दलीयता या दलबन्दी। कांग्रेस, अग्रगामी दल, समाजवादी दल, साम्यवादी दल, इत्यादि सब दलों को अविलम्ब समाप्त करके हमें अपने राष्ट्र को एक सुदृढ़ निर्दल राष्ट्र बनाना चाहिये। सब दलों का दलन करके हमें अपनी पावन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमही को एक विशाल परिवार का एक विशाल ओक—आवास बनाना है। यदि हमने ऐसा न किया और पाश्चात्य राजनीति का अनुकरण करते हुए राजनीतिक दलों को बल दिया तो हमारा नवोदित सौभाग्य उजड़ जायेगा। दलीय शासनप्रणाली से राष्ट्र में ध्रुवता और निश्चलता का सम्पादन नहीं हो सकता। इस प्रणाली से आये दिन रीतियां, नीतियां, नियम और व्यवस्थायें बदलती रहती हैं, परस्पर वैर विरोध बढ़ता रहता है, चारित्रिक अधःपतन होता रहता है, स्वार्थ और भ्रष्टाचार की वृद्धि होती है, थोड़ों का हित और बहुतों का अहित होता है।

हमारा राष्ट्रगठन ग्रामपंचायतों तथा नगर संसदों के आधार पर होना चाहिये, पार्टियों तथा दलों के आधार पर नहीं। हमारा राष्ट्र असाम्प्रदायिक, प्रान्तीयतारहित तथा निर्दल होना चाहिये। दृढ़ता के साथ साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता और दलों का उन्मूलन करना चाहिये। इसी में कल्याण है।

(पृथिवी) मातृभूमि (विवाचसं) विवक्ता तथा (नानाधर्माणं) विधर्मा (जनं) जनसमूह को (यथा ओकसं) यथागृह, गृहवत (बहुधा) बहुत प्रकार से (बिभ्रती) धारण-पोषण करती हुई (ध्रुवा धेनुः इव) निश्चला दुधार गौ के समान (अनपस्फुरन्ती) न छटपटाती हुई (मे) मेरे लिये, मुझ नागरिक के लिये (द्रविणस्य) धनैश्वर्य की (सहस्रं धाराः) सहस्रों धारायें (दुहां) दुहे, दुहा करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

असंबाधं वध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु ।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ॥
(अ० १२-१-२)

(१) (यस्याः) जिसके (बहु) बहुत से (उद्वतः) ऊंचे (प्रवतः) नीचे और (समं) सम [स्थल हैं]।

(२) (या) जो (नानावीर्या ओषधीः) नाना शक्तियों वाली ओषधियों को (बिभर्ति) धारण करती है ।

(३) वह (पृथिवी) मातृभूमि, राष्ट्रभू (मानवानां) मानवों की (असंबाधं) अ-संबाधता, अबाधता, निर्विरोधता को (बध्यतः) दृढ़ करती हुई (नः) हमारा (प्रथतां) विस्तार-विकास करे, (नः) हमारे लिये (राध्यतां) समृद्धि करे ।

मन्त्रार्थ के प्रथम दो भाग स्पष्ट हैं । तीसरे विभाग के "असंबाधं" शब्द पर प्रथम विचार कीजिये । "संबाधं" का अर्थ है बाधा, विरोध, दल । बाधा या विरोध एक ही बात है । परस्पर के विरोध से ही दल बनता है । दल की उत्पत्ति विरोध से ही होती है । दल से विरोध की प्रवृत्ति बढ़ती है । जहां विरोध होता है, वहां न निर्बाध विकास होता है, न निर्बाध समृद्धि होती है । अर्थापत्ति से संबाधं का अर्थ विगठन और विभाजन भी होता है । विगठन या विभाजन से भी राष्ट्रीय विकास और अभिवृद्धि में बाधा होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंबाधं का अर्थ न-संबाधं, संबाधं का उलटा। असंबाधं = अबाधता, निर्विरोधता, संगठन, ऐक्य। जहां अबाधता, निर्विरोधता, संगठन और ऐक्य होगा वहीं विकास और अभिवृद्धि होगी। विकास और अभिवृद्धि के लिये आवश्यक है कि विरोध, विभाजन और विगठन की प्रवृत्तियों का निराकरण किया जाये। विरोध, विभाजन और विगठन का मूल दल है। वास्तविक संगठन और ऐक्य के सम्पादन के लिये हमें अपने राष्ट्र को सर्वतः दलविहीन बनाना चाहिये। दलों को समाप्त किये बिना सच्चा संगठन और मतैक्य नहीं हो सकता। राष्ट्रगठन और मतैक्य के बिना राष्ट्रीय विकास और अभिवृद्धि असम्भव हैं। असंबाधता, विकास और अभिवृद्धि, सहचारी हैं।

दल दो प्रकार के होते हैं—(१) साम्प्रदायिक और (२) राजनीतिक। निस्सन्देह साम्प्रदायिक दलों की प्रवृत्तियां विभाजनकारी, वैर विरोध के बढ़ाने वाली, तथा विनाशकारी होती हैं। परन्तु यह भी ध्रुव सत्य है कि राजनीतिक दलों की प्रवृत्तियां साम्प्रदायिक दलों की प्रवृत्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक विभाजनकारी, वैर विरोध बढ़ानेवाली और विनाशकारी होती हैं। चीन का महाविशाल प्रदेश, जो वर्षों से रक्तरंजित हो रहा है, राजनीतिक दलों की प्रवृत्तियों का ही परिणाम है। गत दोनों विश्वयुद्ध, साम्प्रदायिक दलों की नहीं, राजनीतिक दलों की प्रवृत्तियों के ही परिणाम थे। आज भी जो हमारा भूमण्डल दो विभागों में विभक्त होकर एक तृतीय प्रलयकारी विश्वयुद्ध की भूमिका बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, वह भी साम्प्रदायिक नहीं, राजनीतिक दलबन्दी का ही परिणाम है।

हमारे नवोदित आर्य राष्ट्र के निर्बाध विकास तथा उसकी सुस्थिर और स्थायी अभिवृद्धि के लिये यह अनिवार्यतः आवश्यक है कि साम्प्रदायिक तथा राजनीतिक दोनों प्रकार के दलों को अविलम्ब समाप्त कर दिया जाये। परिस्थितियों से विवश होकर अब साम्प्रदायिक दल सांस्कृतिक संस्थाओं का चोला धारण कर रहे हैं; परन्तु यह ध्यान रहे कि उनके मूल में साम्प्रदायिकता निहित है और अवसर पाकर वे पुनः अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो सकते हैं। साथ ही राजनीतिक दल और उनके कूटनीतिक नेता लोकसेवा, विश्व-कल्याण और प्रजाहित की आड़ में अपने अपने दलों को सुदृढ़ और सुसंगठित कर रहे हैं और अवसर पाकर वे शासनसत्ता हस्तगत करने के लिये अवांछनीय कांडों की रचना कर सकते हैं। साम्प्रदायिक दल यदि धर्मान्ध हैं तो राजनीतिक दल स्वार्थान्ध हैं। साम्प्रदायिक दल यदि छद्मवेशी हैं तो राजनीतिक दल कपटी और महाधूर्त हैं। साम्प्रदायिक दल यदि मानवता के शत्रु हैं तो राजनीतिक दल मानवता के रक्तपेयी पिशाच हैं। लक्ष्य दोनों का ही सत्ता और स्वार्थ है। एक धर्म की दुहाई देता है तो दूसरा लोकहित की। दोनों ही के नारे कुछ हैं और इरादे कुछ हैं। अतः हमें न सम्प्रदायवाद चाहिए न गान्धीवाद, न कांग्रेसवाद चाहिये न समाजवाद, न साम्यवाद चाहिये न पूंजीवाद। समस्त दलों और वादों को समाप्त करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें एक असाम्प्रदायिक, निर्दल, अखण्ड और विशाल आर्य राष्ट्र का निर्माण करना चाहिये, प्रत्येक नागरिक जिसका जन्मतः सदस्य हो और प्रत्येक लोकसेवी जिसका स्वभावतः नेता हो।

चुनाव राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक दलों पर आधारित न रह कर ग्रामों तथा नगरों पर आश्रित हों। प्रत्येक ग्राम की एक ग्राम-पंचायत हो और प्रत्येक नगर की एक नगर-संसद। ग्राम-पंचायतें तथा नगर-संसदें ज़िला-सभाओं के प्रतिनिधियों का चुनाव करें, ज़िला-सभायें प्रान्तीय धारासभाओं के सदस्यों का चुनाव करें और प्रान्तीय धारासभायें केन्द्रीय विधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन करें। प्रान्तीय धारासभायें अपने अपने प्रान्त की शासनसंसदों का निर्माण करें और केन्द्रीय विधानसभा केन्द्रीय शासन मण्डल का। केन्द्रीय विधानसभा ही राष्ट्रपति (प्रेसीडेन्ट) का चुनाव करे तथा प्रान्तपतियों [गवर्नरों] की नियुक्ति करे। इसी भित्ति पर समय पाकर हम एक सार्वभौम सम्राट् और साम्राज्य की स्थापना कर सकेंगे। प्रत्येक नागरिक की निष्ठा, वर्तमान में, अपने राष्ट्र के प्रति होनी चाहिये, किसी दल विशेष के प्रति नहीं।

१५—उपनिवेश

अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता।
अपो येन सुक्षितये तरेमाध स्वमोको अभि वः स्याम॥
(ऋ० ७-५६-२४)

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मन्त्र में हमारी एक बड़ी जटिल समस्या का समाधान है। हमारे इस विशाल पुरातन राष्ट्र की जनसंख्या पहिले ही बहुत अधिक थी। देश के अपावन विभाजन ने उस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है। खाद्यों और जीवनोपयोगी वस्तुओं की कमी के साथ साथ आजीविका [रोज़गार] की विपरीत परिस्थितियों से एक विकट हाहाकार मच रहा है। परिणामस्वरूप जनता का नैतिक धरातल जिस निम्न स्तर तक गिर चुका है और गिरता जा रहा है, उसके विचारमात्र से हृदय कांपता है और लेखनी सिहरती है। दूसरी ओर हमारे राष्ट्रनायक जिस भीरु नीति का अनुसरण कर रहे हैं, उसने समस्त राष्ट्र को महत्वाकांक्षाविहीन बना दिया है और यदि इस क्रम को चालू रहने दिया गया तो वीरप्रसूता यह आर्या वसुन्धरा निकट भविष्य में ही अकल्पनीय दुरवस्थाओं का कुक्षेत्र बन जायेगी। जिस संकुचित मनोवृत्ति और जिस दूषित दृष्टिकोण से राष्ट्र का संचालन किया जा रहा है, राष्ट्रहित में उसे यथाशीघ्र सर्वथा त्याग कर उदाराशयता और स्वस्थ दृष्टिकोण से कार्य करने से ही उलझनें सुलझाई जा सकेंगी, अन्यथा नहीं।

नेताओं की निष्ठा केवल स्वदेश के प्रति न होकर स्वदलों के प्रति होना प्रत्यक्षतः ही बड़ा जघन्य कार्य है। दलों की धारायें स्व स्व स्वार्थों की ओर प्रस्रित हो रही हैं, स्वदेश के सम्पोषण और परिवर्धन की ओर नहीं, जिसका कुफल भ्रष्टाचार के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र को भोगना पड़ रहा है। ऐसे नेता हैं जिन्हें केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस का विश्वास प्राप्त है। ऐसे नेता हैं जिन्हें केवल समाजवादी दल का विश्वास प्राप्त है। ऐसे नेता हैं जिन्हें केवल साम्यवादी दल का विश्वास प्राप्त है। ऐसे नेता हैं जिन्हें केवल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का विश्वास प्राप्त है। ऐसे नेता हैं जिन्हें आर्यसमाज में मान्यता है। ऐसे नेता हैं जिन्हें हिन्दू महासभा में प्रतिष्ठा प्राप्त है। पर आज इस आर्यामही में एक भी ऐसा उच्च, पवित्र और आदर्श नेता नहीं, जिसे सार्वदेशिक विश्वास और मान्यता प्राप्त हो। यह अनिष्टसूचक है। एक राष्ट्र में अनेक नेताओं का होना भयानक है, बड़ा भयंकर है। देश की सबसे बड़ी और सर्वप्रथम आवश्यकता वर्तमान में यह है कि हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र का एक ही नेता हो, और वह नेता सर्वप्रिय, वीर, स्फूर्तिमान्, देशनिष्ठ हो और हो देश की भाषा, वेश, धर्म और संस्कृति का पुजारी, जो देश की आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को ध्रुवता और दृढ़ता के साथ पूर्ण कर सके। ऐसे नेता की स्थापना तब ही सम्भव होगी जब देश के सब राजनीतिक दलों को समाप्त करके देश में सर्वता का वातावरण उत्पन्न किया जाये। इस कार्य के लिये हमें हिंसक, कटु और उग्र उपायों के अवलम्ब की आवश्यकता नहीं। इस साध्य की सिद्धि का एकमात्र उपाय है जनता से सम्पर्क और जनता में प्रचार। परन्तु यह कार्य किया जाये धैर्य, संयम, सोम्यता, सभ्यता, योग्यता, शिष्टता स्थैर्य और अविचल धारणा के साथ।

समस्त पार्टियों और दलों को समाप्त करके शीघ्रातिशीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सर्वप्रिय, सर्वगुणसम्पन्न, परोपकारी, सदाचारी, विद्वान्, धर्मात्मा, निस्पृह, निर्व्यसनी, निर्विलासी, संयमी, शुद्ध, पवित्र, निष्पक्ष, न्यायशील, साहसी, पराक्रमी, दीर्घदर्शी और वीर सार्वदेशिक विधाता [नेता] की स्थापना की जानी चाहिये। ऐसे विधाता के नेतृत्व में ही हमारा राष्ट्र सच्चे अर्थों में अखण्ड और सर्वशक्तिमान् राष्ट्र बन सकेगा। जब ऐसा होगा केवल तब ही हमारी समस्याओं का समाधान हो सकेगा। तब अपने विधाता नेता और विधाता राष्ट्र के संबल से युक्त होकर हम समुद्रों के पार जायेंगे और उन प्रदेशों में, जहां जनसंख्या अति न्यून है, या जहां जनसंख्या बिलकुल नहीं है, हम अपनी अतिरिक्त आबादी को वसायेंगे और अपने उपनिवेश बनायेंगे। तब ही समस्त भूमण्डल पर हम विभाजित मानव को आर्य संस्कृति और धर्म से अलंकृत करके एक विश्वपरिवार में परिणत कर सकेंगे। तब ही यह समस्त वसुधा एक विश्वकुटुम्ब बनेगी। बसाये और बनाये गये समस्त उपनिवेश आर्यावर्त के प्रति सनिष्ठ रहेंगे और आर्यावर्त सब उपनिवेशों के अभ्युत्थानार्थ सदा सचेष्ट और उत्तरदायी रहेगा।

(मरुतः) वीरो! (यः) जो (जनानां) जनों का (असुरः) प्राणप्रिय (वीरः) वीर (विधाता) विधाता-नायक है, वह (अस्मे) हमारे लिये (शुष्मी) बलप्रद (अस्तु) होवे। (येन) जिससे [हम] (सुक्षितये) सु-निवास, सुष्ठु उपनिवेश, बसाने के लिये (अपः) जलदों-सागरों को (तरेम) तरें, पार करें (अध)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और [वहां] (स्वं ओकः) अपना घर, अपनी बस्ती [बसायें] और (वः अभि) तुम्हारे प्रति (स्याम) सनिष्ठ [वफ़ादार] रहें !!

१६—उपाय

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सहः ।
तँल्लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥
(य० २०-२५)

पूर्व कथनानुसार, हमें अपने राष्ट्र का निर्माण निम्नलिखित द्वादश आधारों पर सम्पादन करना है:—

(१) वेद को विश्व-धर्म बनाना ।

(२) आर्यभाषा [नागरी] की अभिव्याप्ति करते हुये, संस्कृत को विश्वभाषा बनाना ।

(३) वैदिक संस्कृति से सुसंस्कृत करके विश्व को आर्य बनाना ।

(४) देश का नाम आर्यावर्त और इस भूमण्डल का नाम आर्यलोक रखना ।

(५) इस देश की जाति का नाम आर्य जाति और इस राष्ट्र का नाम आर्य राष्ट्र रखना ।

(६) समस्त भूमण्डल पर चक्रवर्ती आर्य-साम्राज्य की स्थापना करके सार्वभौम राष्ट्रीयता की स्थापना करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) सूर्यध्वज को राष्ट्रीय और सार्वभौम ध्वज बनाना।

(८) समस्त राजनीतिक दलों को समाप्त करके राष्ट्र को सर्वथा निर्दल राष्ट्र बनाना।

(९) आर्य राष्ट्र को प्रत्येक दृष्टि से सर्वशक्तिमान् बनाना।

(१०) राजनीति में नैतिक धार्मिकता तथा धार्मिक नैतिकता की स्थापना करना।

(११) आर्यावर्त के तत्वावधान में विश्वशासन की स्थापना करना।

(१२) अतिरिक्त आबादियों को रिक्त प्रदेशों तथा थोड़ी आबादी वाले प्रदेशों में बसाना।

जिस समय यह द्वादशी पुण्य साधना पूरी हो जायेगी, यह लोक पुण्यलोक बन जायेगा। इस साधना को सिद्ध करने के उपाय का निर्देश ऊपर लिखे मन्त्र में किया गया है। (यत्र) जहां (ब्रह्म) ब्रह्म, ब्राह्मणवर्ग, ज्ञानी (च) और (क्षत्रं) क्षत्र, क्षात्रवर्ग, वीर (सम्यंचौ) संयुक्त होकर, मिलकर (सह) साथ साथ (चरतः) विचरते, कार्य करते, हैं (च) और (यत्र) जहां (देवाः) देव, नागरिक (अग्निना सह) अग्नि के साथ, उत्साहपूर्वक, विवेक-सहित [विचरते, कार्य करते, हैं], मैं (तं) उस (लोकं) लोक, देश, राष्ट्र, को (पुण्यं) पुण्य, सौभाग्यशाली (प्रज्ञेषं) माना करता हूं।

मानव शरीर में शिर ब्राह्मण है और उसकी स्थापना सबसे ऊपर है। शिर के नीचे भुजारूपी क्षत्रिय है। भुजाओं के नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदररूपी वैश्य और पगरूपी शूद्र है। जो मनुष्य इस शरीररचन-क्रम को जानता है वह पुरुषोत्तम बन जाता है। शिर के नीचे भुजायें, उदर, और पग क्यों बनाये गये हैं ? शिर का कार्य है विचार, भुजा का कार्य है पराक्रम और रक्षा, उदर का कार्य है पोषण और पग का कार्य है धारण, गमन, सेवा। पहिले विचारो, फिर हाथों से कार्य करो। पहिले विचारो, फिर उदरपूर्ति करो। पहिले विचारो, फिर आगे पग बढ़ाओ। शिर ज्ञान है, भुजा क्षत्र है, वैश्य पूषा है, शूद्र स्रष्टा-त्वष्टा है। ज्ञान के बिना न क्षत्र की गति है, न पूषा की, न त्वष्टा की।

राष्ट्र में भी "ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्यो न वैश्यः (अ० ५-१७-९), ब्राह्मण ही स्वामी होना चाहिये, न क्षत्रिय, न वैश्य, न शूद्र।" जिस प्रकार शरीर में भुजा, उदर या पग के नीचे शिर का होना अवांछनीय और अकल्पनीय है, उसी प्रकार राष्ट्र में ब्राह्मण का क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के आधीन होना सर्वथा असम्बद्ध और अमंगलकारी है। शिर ही शरीर का प्रेरक है और ब्राह्मण ही राष्ट्र का संचालक है। विचारदान ब्राह्मण का कार्य है और विचार ही सर्वत्र शासन करते हैं। अभयदान-सुरक्षादान क्षत्रिय का कार्य है और सुरक्षा और निर्भयता ही से राष्ट्र में सुस्थिरता और संसृजन होता है। उत्पादन और ऐश्वर्यसम्पादन श्रमिक और वैश्य नागरिकों का कार्य है और उत्पादन और ऐश्वर्यसम्पादन से ही राष्ट्र सुखी और सम्पन्न होता है। मन्त्र में, राष्ट्रमानवों को, इसी लिये केवल तीन वर्गों में बांटा गया है—(१) ब्रह्म-ब्राह्मण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) क्षत्र–क्षत्रिय और (३) देवाः–नागरिक [वैश्य और शूद्र]।

त्यागी और तपस्वी ब्राह्मण [ज्ञानी जन] उठें और इन द्वादश आधारों का सम्पूर्ण आर्यावर्त में प्रचार करें, नीतिमत्ता, बुद्धि-कुशलता, मधुरता, प्रियता और सत्यता के साथ आर्य राष्ट्र के समस्त क्षत्रियों और नागरिकों को उद्बुद्ध तथा जागृत करें, चलते 'फिरते, मिलते जुलते, हांट डगर में, घर में, यात्रा में, सर्वत्र इन भावनाओं का प्रसार करें, ग्राम ग्राम और नगर नगर में जनता को इन विचारों का बनायें, घूम घूम कर सर्वत्र सभायें करें और समस्त नागरिकों के मतों को अनुकूल बनायें। वास्तविकताओं की ओर से आखें बन्द नहीं की जा सकतीं। लक्ष्य के उस ओर उपर्युक्त भव्य द्वादशाधारी योजना है और इस ओर नवनिर्मित शासनविधान है, जो २६ जनवरी १९५० से लागू किया गया है। इस विधान के आधीन वयस्क मताधिकार के द्वारा शीघ्र ही आम चुनाव होने वाले हैं। उस चुनाव के परिणामस्वरूप जैसा मन्त्रि-मण्डल बनेगा, कार्य उन्हीं के विचारानुकूल होगा। आगामी चुनावों से पहले पहले लोकमत को इन आधारों पर तैयार कर लेने से ही अभीष्ट सिद्ध हो सकता है, अन्यथा नहीं। कांग्रेस में कम से कम ५० प्रतिशत व्यक्ति इन द्वादश विचारों के हैं। आर्यसमाज के शत-प्रति-शत व्यक्ति इन विचारों के हैं ही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भी ५० प्रति-शत व्यक्ति तो अवश्य ही इन विचारों के हैं। हिन्दू महासभा में भी पर्याप्त संख्या इन विचारों के अनुकूल होगी। ब्राह्मण [विद्वान्] लोग अविलम्ब प्रचार कार्य में जुट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायें। एक ओर वे जनता में इन आधारों का प्रचार करें और दूसरी ओर प्रत्येक चुनावक्षेत्र से उपयुक्त व्यक्तियों को जो इन आधारों के प्रति कृतनिष्ठ हों, चुनाव में खड़ा करें। ऐसे कृतनिष्ठ व्यक्ति यदि उपर्युक्त संस्थाओं की ओर से चुनाव के लिये खड़े किये जायें, तो उनका विरोध न किया जाये, अपितु अनुमोदन किया जाये। यदि कहीं किन्हीं संस्थाओं के ऐसे व्यक्ति चुनाव के लिये खड़े किये जायें, जो इन आधारों के विरोधी हों, तो उनके विपक्ष में इन मान्यताओं के स्वतन्त्र व्यक्तियों को चुनावार्थ खड़ा किया जाये और उनकी सफलता के लिये तीव्र प्रचार किया जाये। इन विचारों के जितने अधिक व्यक्ति हम धारासभाओं में भेज सकेंगे उतनी ही मात्रा में उद्देश्यपूर्ति होगी। राजसत्ता की सुविशाल शक्ति साथ होने पर ही साध की सिद्धि होना सम्भव है, समस्त राजसत्ता मन्त्रिमण्डलों में निहित होती है। मन्त्रिमण्डलों का निर्माण जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों में से ही होता है।

प्रत्येक वैदिकधर्मी संस्था को इस दिशा में मिलकर कार्य करना चाहिये। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज का विशाल संगठन बड़ा सुसंगठित कार्य कर सकता है। इस पुस्तक में वर्णित साध आर्यसमाज के लिये एक स्वस्थ पुरोगम [प्रोग्राम] है। वर्षों से आकाश में यह ध्वनि गूंज रही है कि आर्यसमाज की शिथिलता का मुख्य कारण किसी सुनिश्चित पुरोगम का अभाव है। यहां यह एक सुनिश्चित पुरोगम है जिसे कार्यान्वित करने में आर्यसमाज को सुसंगठित होकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। आर्यसमाज के विद्वान् प्रचारक राजस्थान में भ्रमण करें और क्षत्रियों में इन द्वादशाधारों के प्रति उनकी सुप्त भावनाओं को प्रज्वलित करें। राजस्थान में ही नहीं, आर्यावर्त के अखिल क्षत्रियों में इन आधारों तथा वेदों की उदात्त प्रेरणाओं का प्रचार करें। वेद का प्रचार क्षत्रियों में उस सच्चरित्रता और ओज की पुनः प्रस्थापना करेगा, जिससे क्षत्र का, क्षत्रियत्व का, आत्मोत्सर्ग की भावना का, राष्ट्र की सुरक्षा और अभिवृद्धि में मर मिटने की आकांक्षा का, उदय होगा। क्षत्रियों में वह पुराना क्षात्रत्व अब भी विद्यमान है, परन्तु सुप्त अवस्था में है। क्षत्रियों में क्षात्रत्व का अभाव नहीं है, भाव है, परन्तु मूर्छित अवस्था में है। प्रचार द्वारा सुप्त और मूर्छित क्षात्रत्व को केवल जागृत और प्रबुद्ध करना है, और फिर देखेंगे कि आकाशाच्छादित काली घटायें क्षण मात्र में विलीन हो जाती हैं और बिगड़ा हुआ कार्य निमेष मात्र में बन जाता है।

जो भी व्यक्ति अथवा संस्था इस साध की साधना में अपने को सुहुत करे, धन्यवाद और साधुवाद की पात्र है, परन्तु प्रत्यक्षतः यह सुनिश्चित है कि इस साध को सिद्ध करके दिखाने की क्षमता यदि किसी संस्था में है तो वह आर्यसमाज ही है, और यदि किसी व्यक्ति में है तो वह महर्षि दयानन्द के एक सच्चे अनुयायी में है। आर्यसमाज एक ब्रह्मसंस्था है। क्षत्रसंस्था को साथ लेकर, क्षत्रियों में महर्षि के दिव्य सन्देश को फूंक कर, ही आर्यसमाज सफल मनोरथ हो सकेगा। इस ब्रह्म और क्षत्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुसंयोग से अमित शक्ति और अतुल साधनस्रोत उपलब्ध हो जायेंगे। ब्रह्म और क्षत्र मिलकर आर्य राष्ट्र के कोटि कोटि देवों में, करोड़ों नागरिकों में, एक महत्वाकांक्षापूर्ण ज्वलन्त ज्वाला का प्रज्वलन करदें और राष्ट्र के कोने कोने में आत्मचेतना का संचार कर देवें, तो कार्य सिद्ध होजायेगा, निमेष मात्र में सिद्ध होजायेगा। प्रैस और प्लेटफार्म दोनों ही से धुंआंधाड़ प्रचार होने की आवश्यकता है।

प्रचार के साथ साथ रचनात्मक कार्य भी किया जाना चाहिये। केवल मौखक और लेखन कार्य से ही क्षत्र और देव, क्षत्रिय और नागरिक, आर्यसमाज की ओर प्रवृत्त और आकृष्ट न होजायेंगे। सेवा से ही मेवा प्राप्त होती है। आर्यावर्त में आज सामाजिक और दैनिक जीवन बड़ा कष्टपूर्ण हो रहा है। देश के विभाजन के परिणामस्वरूप कुछ ऐसी विकट परिस्थितियां और कुछ ऐसे कठोर कारण समुपस्थित होगये हैं, जिन से नागरिकों का चरित्र नष्ट भ्रष्ट होता जा रहा है और दिन प्रति दिन भ्रष्टाचार और दुरावस्था का प्रसार होता जा रहा है। इन सब का निराकरण करना होगा। आर्थिक, सामाजिक और चारित्रिक समस्याओं को भी सुलझाना होगा। इस विशाल आर्य जाति के क्षत विक्षत अंग प्रत्यंग की चिकित्सा करनी होगी। छुआछूत और जाति पांति के दृढ़ दुर्ग को ढाये बिना शुद्धि का कार्य निरर्थक सिद्ध हुआ है और आगे भी होगा। स्वदेशी आन्दोलन को अति शीघ्र पुनरुज्जीवित करने की भी प्रत्यक्ष आवश्यकता है। ये सब कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमेष मात्र में हो सकते हैं। परम आवश्यकता ब्रह्म क्षत्र के योग से नागरिकों के मतों और विचारों को आन्दोलित और प्रभावित करने की है। कार्य वेतनभोगियों से नहीं, लग्नवान् व्यक्तियों द्वारा ही सम्पन्न होगा। समस्या का हल योग्य वानप्रस्थी तथा संन्यासी ही कर सकेंगे। लग्नवान् और सक्षम व्यक्ति सुखसुविधाओं से मुंह मोड़कर घरों से निकलें, वानप्रस्थ या संन्याश्रम में प्रवेश करें और महर्षि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को सिद्ध व सार्थक करें।

याद रहे—"सब कुछ कर चुकने के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया था कि क्षत्रियों के जागरण से ही सर्वोदय होगा। इसी उद्देश्य से वे राजस्थान में आये थे और क्षत्रियों के जागरणकार्य में ही उन्होंने अपने अमूल्य प्राण विसर्जित किये थे।" निस्सन्देह क्षत्रोदय में ही सर्वोदय निहित है। प्रचार और सेवा के शस्त्रों से सज्ज होकर कार्यक्षेत्र में उतरिये और राष्ट्र के ब्रह्म, क्षत्र और देव समूह को सुसंगठित और जागृत करके द्वादशाधारों पर अपने राष्ट्र के निर्माण का सफल आयोजन तथा प्रबल आन्दोलन कीजिये।

१७—उपसंहार

यह मानते हुये भी कि देश का विभाजन दुर्भाग्यपूर्ण तथा अवैधानिक था, यह तथ्य है कि देश, भारत व पाकिस्तान, दो खण्डों में खण्डित हो चुका है। यह भी प्रत्यक्ष है कि जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत व पाकिस्तान मिल कर एक और अखण्ड आर्यावर्त नहीं बन जाता, तब तक न स्थायी शान्ति ही स्थापित हो सकती है, न कोई वास्तविक प्रगति ही हो सकती है। परन्तु पाकिस्तान को पुनः भारत में मिलाने के आन्दोलन के लिये यह उपयुक्त अवसर नहीं है। इस समय ऐसा करने से देश की अन्तर्राष्ट्रीय साख को बड़ा भारी धक्का लगेगा। प्रान्तों के भाषावार पुनर्निमाण का सिद्धान्त देश में विभाजनकारी प्रवृत्तियों की वृद्धि करेगा, अतः सारी शक्ति लगा कर वर्तमान में इस आन्दोलन को भी ठप कर देना देश के परम हित में होगा। अब जब कि विधान में आर्य-भाषा [नागरी] को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया गया है, प्रत्येक पक्ष को सचाई के साथ आर्यभाषा की अभिव्याप्ति में जुट जाना चाहिये। गोवधनिषेध और मद्यनिषेध में जो विलम्ब हो रहा है वह अशोभनीय है, अनुमानतः आगामी आम चुनावों के कुछ पूर्व इस दिशा में अवश्य घोषणा की जायेगी। चरित्रहीनता तथा भ्रष्टाचार भी जनजागृति के विकास के साथ विलीन होते जा रहे हैं। राष्ट्रभावना के प्रसार के साथ स्वार्थवृत्तियां विनष्ट होती जा रही हैं।

जैसी कि प्रत्येक निष्पक्ष विचारशील व्यक्ति की धारणा है, आर्यावर्त का नया विधान, जो कि २६ जनवरी १९५० से कार्यान्वित हो रहा है, सर्वथा असांस्कृतिक, अनार्य और अनुपादेय है। परन्तु अब जब कि वह पास होकर कार्य में परिणत हो रहा है, इस विषय में ग्लानि व चिन्ता रखने से कुछ लाभ न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकमत निर्माण होने पर विधान में यथेच्छ संशोधन किये जा सकते हैं और जनता चाहे तो समय पाकर नवीन विधाननिर्मातृ सभा नियत की जा सकती है और फिर एक नया विधान बनाया जा सकता है। इस समय तो इस विधान का पालन करना ही, अनुशासन तथा सुव्यवस्था, दोनों दृष्टियों से, वांछनीय है। वैदिकसंस्कृतिप्रधान इस आस्तिक आर्य राष्ट्र के ध्वज, सिक्कों, टिकटों और सनदों पर अशोक-चक्र का होना अपमानजनक और अशोभनीय है। इसके स्थान पर सूर्यचक्र की स्थापना के लिये शिष्ट, वैधानिक और स्थिर आन्दोलन अविलम्ब प्रारम्भ कर देना चाहिये।

रियासतों का प्रान्तों में विलय अथवा उन का संघीकरण देश के लिये निस्सन्देह बड़ा हितकर सिद्ध होगा। परन्तु इसके परिणामस्वरूप जो शतशः राजे सर्वथा बेकार हो गये हैं, उनका राष्ट्रीय सुव्यवस्था के लिये बड़ा सदुपयोग हो सकता है। यदि बेकार राजाओं को सम्मानास्पद और उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर आसीन किया जाये तो भ्रष्टाचार-निवारण तथा रिश्वत-निवारण में तीव्र प्रगति हो सकती है। एक भी राजा ऐसा नहीं है जो भ्रष्टाचार और रिश्वत का शिकार हो सके। समय की गति ने उनके नेत्र खोल दिये हैं। विषय, विकार, व्यसन और विलास से उनका जो अपकार हुआ है, उससे उन्हें शिक्षा मिली है। सब ही राजे प्रजा में अप्रिय नहीं थे। उनमें अनेक सदाचारी, सक्षम और सफल शासक थे। अनेक अपनी अपनी प्रजा में इतने प्रिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे कि उनकी प्रजा अब भी उनसे मोहपूर्ण प्रेम करती है। ऐसे राजा महाराजाओं को गवर्नर तथा सेनापति आदि बनाने से शासनक्षमता तथा राष्ट्रव्यवस्था में शीघ्र अभिवृद्धि और समुन्नति होगी।

अल्पसंख्यक मुसलमानों के तुष्टीकरण की नीति का ही सीधा दुष्परिणाम देश का विभाजन हुआ है। परन्तु विभाजन के बावजूद भी मुस्लिम समस्या आर्यावर्त में अभी तक मौजूद है। और जब तक एक भी मुसलमान इस देश में विद्यमान है, तब तक यह समस्या बनी ही रहेगी। इस समस्या का एक मात्र सही और स्थायी हल "शुद्धि" है। परन्तु आर्येतर [मुस्लिम, क्रिश्चियन, पारसी, आदि] वर्गों को शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा देकर आर्य बनाने से पूर्व या ऐसा करने के साथ साथ, स्वयं आर्य जाति में से छूतछात तथा जाति पांति की परिसमाप्ति करना आवश्यक है। यद्यपि विधान में इस बुराई का बहिष्कार किया गया है, पर लोगों के हृदयों में से अभी इसे निकालना शेष है। यदि शीघ्र ही ऐसा न किया गया तो देश के भविष्य में भारी आशंकायें सदा ही बनी रहेंगी। कभी लोग पाकिस्तान के नारे पर हंसा करते थे, परन्तु पाकिस्तान बन गया। अब "इस्लामिस्तान" के निर्माण की आवाज़ पर भी भोले लोग मुस्करा रहे हैं। पर पाकिस्तान की तरह इस्लामिस्तान भी बनेगा, अवश्य बनेगा और शीघ्र बनेगा। और जिस प्रकार आज आर्यावर्त का प्रत्येक मुसलमान हृदय से पाकिस्तानी है, तब आर्यावर्त का प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान इस्लामिस्तानी होगा। बहुत अधिक स्वप्नशीलतायें और आकाशउड़ानें अच्छी नहीं होतीं। वास्तविकताओं से जूझना ही चाहिये और जूझना पड़ेगा। आर्यावर्त की अखिल जनता आर्य ही होनी चाहिये, अन्यथा धर्म और संस्कृति की विभिन्नता भूत की तरह भविष्य में भी पुनः भयंकर परिणाम उत्पन्न करेगी। इतिहास साक्षी है कि आर्यावर्त में जब जो जातियां बाहर से आईं, आर्यों ने सदा ही उन्हें वैदिक धर्म और आर्यसंस्कृति से समुपेत करके ऐसा पचाया कि वे सब आर्य जाति के अंग बन गये। नमक की खान में जो गिरा वह नमक बन गया। आर्यावर्त में जो भी जातियां आईं वे आर्य बन गईं। इतना ही नहीं, युगों तक आर्यों ने समस्त भूमण्डल के मानवों को वैदिक धर्म और आर्यसंस्कृति से सुसंस्कृत रख कर उन्हें आर्यावर्त का अनुवर्ती और अनुयायी बनाये रक्खा। लगभग गत ९०० वर्षों से आर्यों ने अपनी इस परम्परा को सर्वथा भुला रक्खा है। परिणाम सर्वविदित है। अपनी इस परम्परा को पुनः प्रवृत्त किये बिना न हमारा दुर्भाग्य दूर होगा और न हमारा भविष्य समुज्वल होगा।

धर्म और संस्कृति की राष्ट्रव्यापी एकता के लिये सरकारी सहायता से बहुत कुछ किया जा सकता है, परन्तु सब कुछ नहीं। वास्तविक और सम्पूर्ण कार्य तो योग्य और लग्नवान् व्यक्तियों द्वारा ही सम्पादन होगा। प्रत्येक संस्कृतज्ञ गृहस्थ अपने गृह पर एक घण्टा नित्य संस्कृतरात्रिपाठशाला चलाये और व्यावहारिक रीति से [व्याकरण की पद्धति से नहीं] वयस्क और प्रौढ़ गृहस्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को संस्कृत पढ़ायें। फिर पढ़नेवाले गृहस्थी अपने अपने गृहों में अपने अपने गृहों के सदस्यों को संस्कृत का अभ्यास करायें। इसी प्रकार प्रत्येक वेदवेत्ता पुरुष न्यून से न्यून एक घण्टा प्रति दिन वेदाध्यापन तथा वेदप्रचार में व्यय करे। इस क्रम से वेद और संस्कृत की शिक्षाओं को समस्त राष्ट्र में व्याप दें। राष्ट्रभाषा [आर्यभाषा, नागरी] की अभि-व्याप्ति के लिये प्रत्येक नागरिक यह नियम करे कि अपना समस्त व्यवहार राष्ट्रभाषा में ही करे, समाचारपत्र नागरी के पढ़े, चिट्ठियों पर पते नागरी ही में लिखे। प्रत्येक नागरिक अपने देश को आर्यावर्त के नाम से ही लिखे बोले, परस्पर एक दूसरे को आर्य और आर्या के नाम से ही सम्बोधन करे और अपने राष्ट्र को आर्यराष्ट्र कहे बोले। "व्यवहार से ही विस्तार होता है, व्यवहार से अभिव्याप्ति होती है," इस अटल सिद्धान्त को सदा याद रखना चाहिये। व्यवहारेण हि संसिद्धिः, व्यवहार से ही सिद्धि प्राप्त होती है।

विचारस्वातन्त्र्य और कार्यस्वतन्त्रता से यह कदापि तात्पर्य नहीं है कि जो कुछ जी में आये वही कह दिया जाये और जो कुछ मन में आये वही कर लिया जाये। स्वतन्त्रता और संयम साथ साथ चलने चाहियें। स्वतन्त्रता एक श्रेष्ठतम वरदान है, यदि स्वतन्त्रता का संयमपूर्वक उपभोग किया जाये। जहां संयम होता है, वहीं शिष्टता शालीनता और मर्यादा होती हैं। जहां असंयम होता है, वहां अशिष्टता अश्लीलता और अमर्यादा होती हैं। संयम में ही सदाचार और चरित्रता निहित है, असंयम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Entered in ... Signature with Date

दुराचार, भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता का निवास होता है। एक दूसरे की आलोचना करनी ही है तो द्वेष से नहीं सदाशयता के साथ, सदुद्देश्य के साथ और लोकहित की भावना के साथ, ही की जानी चाहिये। व्यक्तिगत आक्षेप तो सर्वथा अवांछनीय हैं ही, संस्थागत आक्षेप भी सर्वथा त्याज्य हैं। आलोचना न तो व्यक्तियों की की जानी चाहिये न संस्थाओं की, क्योंकि इससे विद्वेष और विभाजन को प्रोत्साहन मिलता है। आलोचना केवल सिद्धान्तों और कार्यों की ही होनी चाहिये और वह भी रचनात्मक। सच्ची आलोचना वही है जो विपक्षी के लिये भी समाधानकारक हो। अधिक श्रेष्ठ तो यही है कि दूसरे की रेखा को लघु बनाने के लिये उस लघु रेखा को न मिटा कर हम एक उससे अधिक दीर्घ रेखा खींच दें। आलोचना की अपेक्षा कार्य में कहीं अधिक बल है। कार्य से बढ़ कर कार्य करने से ही समस्याओं का वास्तविक हल होगा। आजकल होरहा है "कटु आलोचना और ... शून्य"। होना चाहिये, "पहले कार्य, पीछे आलोचना।" यदि अपने को आलोचित के स्थान में रखकर विचार करने ... आलोचना करने की बहुत कम आवश्यकता होगी। जितना ... आलोचना में व्यय किया जाता है, उतने समय में ठोस ... किया जाये तो बहुत कार्य हो जाता है।

ईर्ष्या, द्वेष और कटुता का सर्वथा त्याग करके सांमनस्य, सहृदयता और प्रियता के साथ काम करना है। मन वचन और कर्म से कोई भी कार्य ऐसा न करें जिससे राष्ट्रीय और सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar